★ वर्ष 46 ★ अंक 12 ★ दिसम्बर 2019

# हंसती दुनिया

₹15/-

# हँसती दुनिया

• वर्ष 46 • अंक 12 • दिसम्बर 2019 • पृष्ठ 52

**बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका**

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

प्रकाशक एवं मुद्रक : सी. एल. गुलाटी
ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली–9
हेतु एम.पी. प्रिंटर्स बी–220 फेस–II,
नोएडा–201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर
सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरकारी कॉलोनी,
दिल्ली–09 से प्रकाशित किया।

**मुख्य सम्पादक : हरजीत निषाद**

सम्पादक **विमलेश आहूजा**

सहायक सम्पादक **सुभाष चन्द्र**



Ph.: 011-47660200
Fax: 01127608215
Email: editorial@nirankari.org
Website: http//www.nirankari.org


सदस्यता शुल्क

| देश | 1 वर्ष | 3 वर्ष | 5 वर्ष | 11 वर्ष |
|---|---|---|---|---|
| भारत/नेपाल | ₹ 150 | ₹ 400 | ₹ 700 | ₹ 1500 |
| यू.के. | £15 | £40 | £70 | £150 |
| यूरोप | €20 | €55 | €95 | €200 |
| अमेरिका | $25 | $70 | $120 | $250 |
| कनाडा/आस्ट्रेलिया | $30 | $85 | $140 | $300 |

अन्य देश : उपरोक्तानुसार अमेरिकी डालर के बराबर राशि देय होगी।





## स्तम्भ


4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
11. समाचार
38. कभी न भूलो
44. पढ़ो और हँसो
46. क्या आप जानते हैं?
49. रंग भरो
50. आपके पत्र मिले


## चित्रकथाएं


12. दादा जी
34. किट्टी

## विशेष/लेख


6. सद्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज के दिव्य वचन
7. पत्र-पत्रिकाएं घर-घर में पहुँचाएं
: सी. एल. गुलाटी
16. विनम्रता को जीवन शैली ...
: राजकुमार जैन
18. एरोबिक क्या है?
: विभा वर्मा
18. नाड़ी पैंडूलम की खोज
: राधा नाचीज़
22. पर्यावरण और ईंधन
: अंकुश्री
24. पहेलियां
: रुचि गुप्ता
28. एक विलक्षण जीव ...
: अभिनंदन शुक्ल
29. समुद्री कनखजूरा
: परशुराम शुक्ल
30. विज्ञान प्रश्नोत्तरी
: घमंडीलाल अग्रवाल
33. उड़ने वाली गिलहरी
: किरण बाला
40. पेंग्विन एक विचित्र पक्षी
: किरण बाला


## कविताएं


8. जाड़े की सुबह पढ़ाई
: सत्यनारायण विश्वकर्मा
8. सर्दी का आगाज़
: गफूर 'स्नेही'
19. विनती
: राधेलाल 'नवचक्र'
19. शिक्षक कक्षा में नित आते
: हरजीत निषाद
23. दो बाल कविताएं
: महेन्द्र सिंह शेखावत
27. दो बाल कविताएं
: कमलसिंह चौहान
39. बुजुर्ग
: कीर्ति श्रीवास्तव
39. मेरी बहन बिल्लो रानी
: प्रियंका प्रियदर्शनी
39. मेरी गुड़िया
: श्रवण कुमार
47. सबका एक सहारा
: आशिमा नारंग
47. गुरु
: सुकीर्ति भटनागर

## कहानियां


9. लालच का फल
: राजकुमार जैन 'राजन'
20. लौट आई हरियाली
: डॉ दर्शन सिंह 'आश्ट'
25. नया सवेरा
: प्रमीला गुप्ता
31. हथिनी की होशियारी
: कीर्ति श्रीवास्तव
33. तलवार और ढाल
: राधेलाल 'नवचक्र'
42. सजग महात्मा
: दिनेश राय

# प्रसन्न रहें

हर व्यक्ति प्रसन्न रहने का प्रयत्न करता है क्योंकि वह हमेशा प्रसन्न रहना चाहता है। वह मेहनत भी करता है, दूसरों से आगे भी निकलना चाहता है, यश प्राप्त करना चाहता है और धन-धान्य से भरपूर जीवनयापन की कामना भी करता है। केवल कामना या किसी वस्तु को प्राप्त करने की चाहत रखना अपने-आप में पर्याप्त नहीं है। उस वस्तु विशेष को पाने के लिए कर्म भी करना जरूरी होता है। कर्म के साथ-साथ उस कार्य को विधिवत् तरीके से करना भी आवश्यक होता है।

हम सभी अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कर्म में जुट जाते हैं और वह भी पूरी लगन, मेहनत और ईमानदारी के साथ। इस तरह हम अपने कर्म को सफल तभी मानते हैं जब हमें उससे अपेक्षित परिणाम मिलने आसान हो जाते हैं। यह अपेक्षित परिणाम हमें अपनी सफलता का आभास दिलाते हैं और इसी से हमें प्रसन्नता का अनुभव भी होता है। यदा-कदा परिणाम हमारी अपेक्षा के अनुरूप नहीं हो पाते और वह हमारी खुशी को कम कर देते हैं। कभी-कभी उदासी का कारण भी बन जाते हैं। इस प्रकार हमारी खुशी हमारे कर्म के परिणाम पर निर्भर होती है।

वस्तुत: प्रसन्नता हमारे मन की स्थिति को दर्शाती है और मन की स्थिति अधिकतर परिस्थितियों के आधीन हो जाती है। हम परिस्थितियों को अपनी सफलता या असफलता का कारण मानना आरम्भ कर देते हैं। इसके साथ-साथ हम दूसरे व्यक्ति की सफलता से अपनी असफलता की तुलना कर अपना मूल्यांकन भी करते रहते हैं। इस तरह का मूल्यांकन हमें अपने कर्म से भटका देता है परन्तु अगर हमारा दृष्टिकोण अपने सुधार की ओर होगा तो यही मूल्यांकन हमारी प्रगति का कारण भी बन सकता है।

साथियों! कोई भी समय, परिस्थिति, अवस्था या हालात हमारे स्वयं के दृष्टिकोण पर निर्भर होते हैं। हमारा प्रसन्न रहना या निराशा में रहना हमारा अपना ही स्पष्ट निर्णय होता है। चाहे हम इस निर्णय को किसी व्यक्ति, हालात पर डाल दें कि अमुक व्यक्ति या हालात की वजह से हम खुशी या सफलता को प्राप्त नहीं कर सके।

हमें अपना मूल्यांकन अवश्य करना है कि हम पूरे वर्ष में कौन-कौन सी बातों, स्थितियों और रूकावटों को अपने लक्ष्य की प्राप्ति में बाधा मानते रहे। साथ-साथ यह भी देखना है कि इन स्थितियों, बातों या रूकावटों को हमने उद्देश्य प्राप्ति का साधन भी माना या नहीं क्योंकि कोई भी बाधा या रूकावट एक रास्ता या दिशा अवश्य दिखा जाती है। हमें एक नया अवसर देती है, अपनी योग्यता को परखने की और परिश्रम करने की प्रेरणा भी देती है। जो व्यक्ति बाधा या रूकावट को अपनी श्रेष्ठता की चुनौती की तरह स्वीकार करता है और अपने लिए नया रास्ता खोज लेता है वह कोई भी कार्य करते समय हमेशा प्रसन्न ही रहता है। उसकी खुशी सफलता के परिणाम पर निर्भर नहीं रह जाती बल्कि हर स्थिति में प्रसन्नतापूर्वक कार्य करना ही उसकी आंतरिक खुशी का कारण बन जाता है।

हर व्यक्ति अपने-अपने तरीकों तथा पालन-पोषण और संस्कारों के अनुरूप कार्य करता है। अपनी मेहनत, लगन और उचित एवं सही मार्गदर्शन से वह अपने तरीके और जीने का ढंग स्वयं भी निर्मित कर सकता है। हर कठिनाई में भी एक नया अवसर देख सकता है। इस तरह उसे जीवन में कठिनाई भी एक दृढ़-निश्चय वाला व्यक्तित्व प्रदान कर देगी। आरामदायक और अनुकूल परिस्थितियों में तो कोई भी आसानी से कार्य कर सकता है परन्तु हर असामान्य परिस्थिति में अवसर केवल प्रसन्नचित्त हृदय ही निकाल सकता है इसलिए हम पहले प्रसन्न रहें तथा हर कार्य को प्रसन्नचित्त होकर करें और परिणाम को प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार करें। अगर हमें अपनी प्रसन्नता की तुलना ही करनी हो तो हमें अपने साथ ही करनी होगी न कि किसी और के साथ कि मैं पहले कितना प्रसन्न था और अब कितना हूँ अर्थात् वर्ष के आरम्भ में और अब वर्ष के समापन पर। स्वयं का मूल्यांकन हमेशा सुखदाई रहेगा।

*– विमलेश आहूजा*

हमारे पवित्र ग्रंथ : हरजीत निषाद

# सम्पूर्ण अवतार बाणी

**पद संख्या : 214**

मैं आखां मैं रब नूं पाया लोकी मनदे गल नहीं।
अपणी बीती आप सुणावां इस विच कोई छल नहीं।
मैं एह जीन्दे जी प्या आखां मुक्ति लोको पा लई ए।
जनम मरन दी फाही लोको अपणे गल चों लाह लई ए।
मेरे ब्यान ने हलफ़िया लोको मैं हुण जमणा मरना नहीं।
कहे अवतार उस धर्मराज तों इस मेरी रूह डरना नहीं।

**भावार्थ :** उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी कह रहे हैं कि संसार में जन्म-मृत्यु का भय सबसे बड़ा और पीड़ायुक्त है। संसार में लोगों को जन्मते-मरते देखकर इन्सान इस आवागमन के चक्कर को जानना और समझना तो चाहता है लेकिन यह अपने मन की चलाता है। संसार में जन्म-मरण के कठिन चक्कर से छुड़ाने का परोपकारी कार्य केवल समय के सद्गुरु द्वारा ही सम्भव होता है लेकिन इन्सान सद्गुरु की बात को सहजता से मानने को राजी ही नहीं होता। उसके मन की यही सोच उसकी मुक्ति में सबसे बड़ी बाधा बन जाती है।

बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि यह मेरी स्वयं की आपबीती है जो मैं लोगों को सुनाना चाहता हूँ, लेकिन लोग मानने को तैयार नहीं होते। जब मैं सच्ची बात कहता हूँ कि मैंने परमात्मा को पाया है तो लोग इस पर विश्वास करने को तैयार नहीं होते। मैं कहता हूँ कि यह मेरी आपबीती है, इसमें कोई छल-कपट वाली बात ही नहीं है फिर भी लोगों को विश्वास नहीं होता। लोग तो मरने के बाद मुक्त होने की बात करते हैं लेकिन मैं जीते-जी मुक्ति की बात कर रहा हूँ क्योंकि मैंने सद्गुरु की कृपा से परमात्मा के दर्शन करके मुक्ति पा ली है। मैंने जन्म-मरण की फांसी अपने गले से उतार फेंकी है। अब मैं बन्धनमुक्त हूँ। मैं जीते-जी मुक्त हूँ। जन्म-मृत्यु की इस फांसी से बचना सद्गुरु की कृपा के बिना सम्भव नहीं है। यह मेरा हलफिया बयान है कि अब मुझे बार-बार जन्मना-मरना नहीं है।

बाबा अवतार सिंह जी पूरी दृढ़ता से इस सच्चाई को उजागर कर रहे हैं कि मैं अब आवागमन के भय से मुक्त हो गया हूँ। संसार में रहते हुए मानव जो भी शुभ-अशुभ कर्म करता है वे कर्म उसका पीछा नहीं छोड़ते। इन्सान को उन कर्मो का फल भोगना ही होता है। मृत्यु के उपरान्त जिस धर्मराज ने जीवन के शुभ-अशुभ कर्मों का लेखा-जोखा पेश कर हिसाब मांगना है, उससे मेरी आत्मा को अब कोई भय नहीं है क्योंकि सद्गुरु की कृपा से मैं जीवन-मुक्त हूँ।

बाबा अवतार सिंह जी इतने आत्मविश्वास से यह बात इसलिए कह पा रहे हैं क्योंकि सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापी परमात्मा के दर्शनों के उपरान्त उनमें यह दृढ़ विश्वास जाग्रत हो चुका है कि जिस निरंकार-प्रभु की आज्ञा में रहकर जगत के सारे जीव अपनी जीवन-यात्रा तय करते हैं, वह अब मेरे अंग-संग है। मैं निरन्तर इसको देखकर इसका सुमिरण कर रहा हूँ इसकी इच्छा में अपना जीवन सफर तय कर रहा हूँ। यही कारण है कि अब मृत्यु से पहले और बाद के समस्त भय मेरे मन से दूर हो गए हैं। संसार के लोग अगर मेरी यह बात मान लें तो उनका जीवन भी आनन्दमय हो सकता है।

# सद्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज के दिव्य वचन

- ब्रह्मज्ञान रूपी ताली से भ्रम और बंधनों के पक्षियों को उड़ाया जा सकता है।
- सन्तों, महात्माओं ने सदैव ही मानव को यह जाग्रति प्रदान की है कि लालच, अहंकार, वैर, विरोध जैसे दुर्भावों से बचकर रहें।
- नफरत को तज दें और प्यार को अपनायें। हर पल निरंकार-प्रभु का शुकराना करें कि इसने हमें जो कीमती श्वांस दिये हैं, इन्हें हम मूल्यवान बना लें।
- सकारात्मकता प्राप्त करने का श्रेष्ठतम मार्ग सेवा, सुमिरण व सत्संग ही है।
- हमें अपने जीवन में सही दशा और दिशा का चुनाव करना है।
- हम यदि सत्संग की शिक्षाओं को जीवन में ढालेंगे, निरंकार का आसरा लेंगे तो अवश्य ही सहज रूप से जिन्दगी आसान लगने लगेगी।
- जिन्दगी में उतार-चढ़ाव आते हैं परन्तु यदि मन का नाता निरंकार से जुड़ा रहता है तो विपरीत परिस्थिति में भी इस पर परिपक्वता कायम रहती है।
- हम अपना मन शुद्ध और प्रेम से सुगन्धित रखें। सुख-चैन छीनने वाले नहीं, सुख-चैन देने वाले बनें।
- परमात्मा जिस प्रकार से हम सभी को प्यार करता है। इसी तरह हमें भी सबसे प्यार करना है, प्यार को ही बढ़ावा देना है न कि नफरत को।
- युवाओं को नकारात्मकता से बचाते हुए, निरंकार-प्रभु से नाता जोड़कर अपने जीवन को प्रेरणादायक बनाना होगा जिससे पूरे विश्व में प्रेम और भाईचारा स्थापित हो सके।
- जब हम ब्रह्मज्ञान का आधार लेकर कर्म करते हैं तो हमसे गलतियां होने की संभावनाएं कम हो जाती हैं।
- जब हम साध-संगत में होते हैं तब हमें अच्छे से अच्छे व्यवहार का अभ्यास करना चाहिए ताकि यह हमारी आदत बन जाए। केवल सद्गुरु के समक्ष ही नहीं बल्कि सुन्दर व्यवहार हमारा स्थायी स्वभाव बन जाए।
- अविनाशी परमात्मा हर समय हमारे अंग-संग है। यदि यह अहसास बना रहेगा तो हम गलतियां करने से बच सकते हैं। वर्तमान को सुन्दर बनाने के लिए उज्ज्वल जीवन जीना होगा।
- जीवन में निखार लाने के लिए सत्संग बहुत आवश्यक है। जीवन में सद्गुण सत्संग के माध्यम से ही आ सकते हैं।
- हमारा आचरण और व्यवहार ऐसा होना चाहिए कि कुछ समय के लिए ही नहीं बल्कि सदैव के लिए सुन्दर व्यवहार हो। सिर्फ दिखावे में नहीं, सच्चे मायने में बदलाव नज़र आना चाहिए।
- परमात्मा ने इतना अमूल्य जीवन हमें दिया है, हम इसे किसी की निंदा, नफरत और कमियां निकालने में व्यर्थ न गंवाएं।

– संकलनकर्ता : रीटा ( दिल्ली )

# पत्र-पत्रिकाएं
# घर-घर में पहुँचाएं

– सी. एल. गुलाटी, सचिव एवं प्रभारी,
पत्रिका विभाग, सं.नि.मं., दिल्ली

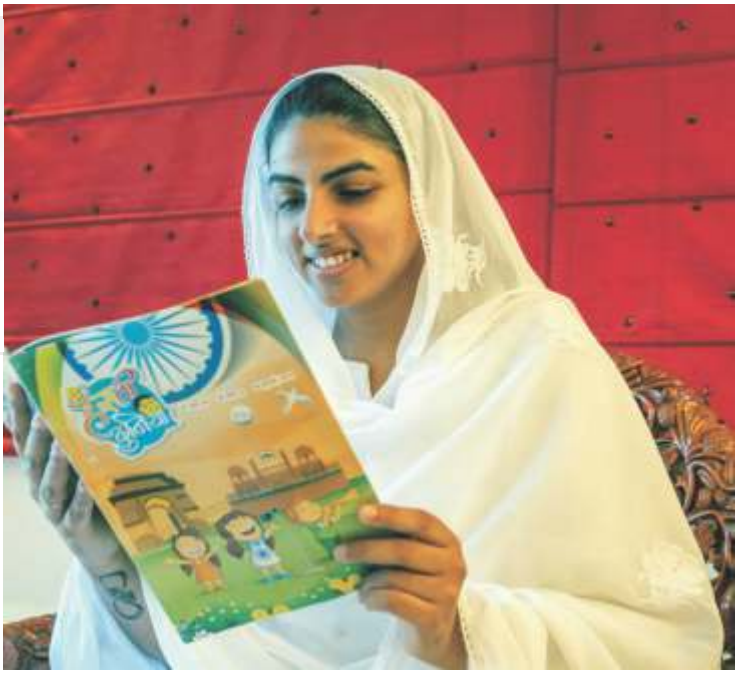

**जब-जब** भी पीर, पैग़म्बर, सद्गुरु प्रकट होते हैं तो संसार के उद्धार एवं परोपकार के लिए अपने आने का पैग़ाम अथवा सत्य-संदेश के प्रचार-प्रसार हेतु अनेकों साधन अपनाते हैं। इनमें मुख्य साधन है बोलकर प्रचार (Spoken words) जैसे कि नियमित रूप में सत्संग, समागम आदि। सत्य संदेश के लिए जितना बोलना लाभदायक है उतना ही महत्व लिखित शब्दों (Written words) का भी है। इसी साधन द्वारा आज हमारे पास पुरातन पीर-पैग़म्बरों के धर्म-शास्त्र उपलब्ध हैं जिनके अध्ययन से हमारे मन में प्रभु-प्राप्ति की जिज्ञासा उत्पन्न होती है।

आज सन्त निरंकारी मिशन ब्रह्मज्ञान द्वारा विश्व समाज में दया, करुणा की भावना स्थापित कर रहा है। अज्ञानता में जीवन जीना पाप है और ज्ञान लेकर औरों को अज्ञानता में रहने देना महापाप है। ब्रह्मज्ञान की जानकारी के साथ जुड़ी हुई एक जिम्मेदारी है कि ज्ञान लेकर घर में बैठना नहीं बल्कि इसको घर-घर में बांटना है।

**जो 'शौक' तूने देखा, औरों को भी दिखा दे।**
**है आदमी के जिम्मे कुछ फ़र्ज आदमी के।।**

सन्त निरंकारी मिशन के देश-विदेश में सत्संग भवन हैं जो निरंकारी महात्माओं के लिए जीवन्त शक्ति (Surviving Force) हैं और मिशन की संचालक शक्ति (Driving Force) है निरंतर सत्संग और समागमों द्वारा मिशन का संदेश सम्पूर्ण विश्व तक पहुँचाना।

मिशन द्वारा 11 भाषाओं में मासिक पत्रिका सन्त निरंकारी, 4 भाषाओं में बच्चों के लिए मासिक हँसती दुनिया और 3 भाषाओं में एक नज़र समाचार पत्र द्वारा मिशन की गतिविधियां प्रकाशित की जाती हैं। मिशन के प्रचार-प्रसार में **निरंकारी पत्र-पत्रिकाओं का अभियान मांगे सबका योगदान,** अतः निरंकारी पत्र-पत्रिकाएं घर-घर पहुँचाएं। सभी महात्मा आप नियमित रूप से पत्र-पत्रिकाएं पढ़ें और औरों को भी पढ़ायें।

बाबा हरदेव सिंह जी और सद्गुरु माता सविन्दर हरदेव सिंह जी पत्र-पत्रिकाएं पढ़ते थे और आज सद्गुरु माता सुदीक्षा जी भी नियमित रूप से पत्र-पत्रिकाएं पढ़ते हैं तो फिर सोचने वाली बात है कि हम क्यों न पढ़ें? आइए, हम सभी पत्र-पत्रिकाओं के प्रचार-प्रसार में जुट जाएं–

**उठो जुटो सब सेवा में करके खूब तैयारी।**
**हँसती दुनिया, एक नज़र हर हाथ में सन्त निरंकारी।**

कविता : सत्यनारायण विश्वकर्मा

# जाड़े की सुबह पढ़ाई

बहने लगी हैं सर्द हवायें,
जाड़े की ऋतु आई।
राहत मिली गर्मी से अब,
शुरू कीजिए भाई पढ़ाई।।

पीले गेंदो के फूल लुभाते,
खूब मखमली धूप सुहाते।
जाड़े की ठिठुरन को देख,
मम्मी ने निकाली है रजाई।।

शुरू हो गई शीत लहर,
निकल गये हैं स्वेटर-मफलर।
आलस भागा दूर किनारे,
मुर्गे जी ने तान सुनाई।।

खाया-पीया हजम होता है,
ठण्ड में ब्रेड-पकौड़ा भाता है।
भूख की बात सुनते ही मम्मी,
मन ही मन मुस्काई।।

परीक्षा में अंक आते अच्छे,
जो सुबह उठके पढ़ते बच्चे।
नाम कमाया है उसने,
जिसने की जाड़े में पढ़ाई।।

कविता : गफूर 'स्नेही'

# सर्दी का आगाज़

सर्दी का हो गया आगाज़,
वही थर्राने का अंदाज़।

पहनो स्वेटर कोट व शाल,
रात रजाई कंबल डाल।
सपनों के बनें महाराज,
सर्दी का हो गया आगाज़।

खाओ पोहे और इमरती,
समोसे कचौरी भी बनती।
चटनी करे रसीला स्वाद,
सर्दी का हो गया आगाज़।

आओ दादा जी के संग,
सुबहो-शाम बढ़ाते कदम।
सेहत के तुम जानो राज़,
सर्दी का हो गया आगाज़।

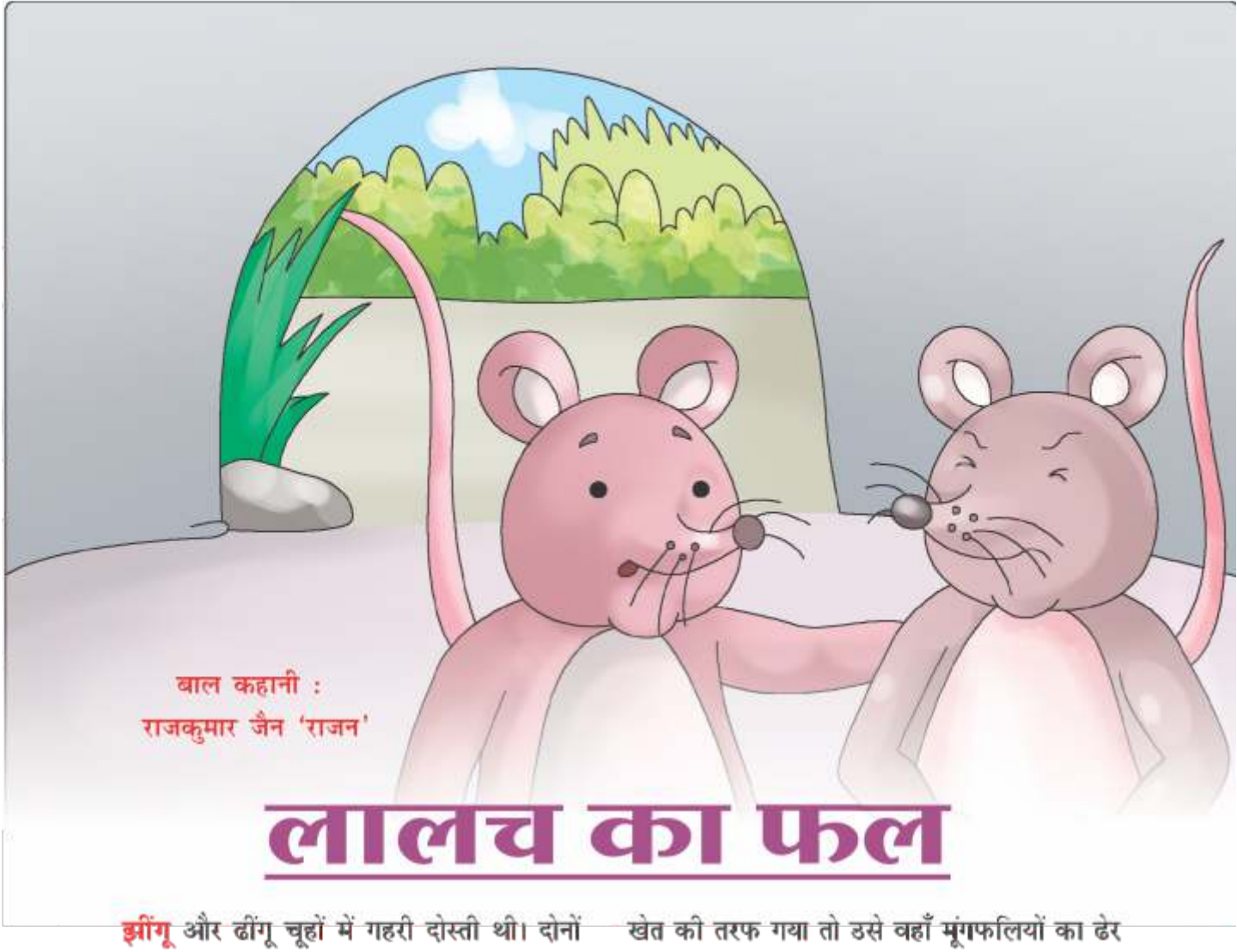

बाल कहानी :
राजकुमार जैन 'राजन'

# लालच का फल

झींगू और ढींगू चूहों में गहरी दोस्ती थी। दोनों एक ही घने बरगद के पेड़ तले की मांद में रहते थे। झींगू बहुत ही शान्त स्वभाव का और नियम का पक्का था जबकि ढींगू गुस्सैल और लालची था।

कभी झींगू, ढींगू के लिए ताजा अखरोट ढूंढकर लाता तो कभी ढींगू दानेदार मूंगफली झींगू के लिए लाता। मुसीबत के समय भी दोनों एक-दूसरे की मदद करते। ढींगू के गुस्सैल और लालची स्वभाव से झींगू बहुत दुःखी रहता। वह ढींगू चूहे को समझाने की कई कोशिशें कर चुका था।

एक शाम दोनों अपने-अपने बिल में लौटे तो ढींगू चूहे के पेट में जोर से दर्द हो रहा था। हुआ यह था कि सुबह जब ढींगू भोजन की तलाश में पास के खेत की तरफ गया तो उसे वहाँ मूंगफलियों का ढेर दिखाई दिया।

बस, फिर क्या था। ढींगू खेत में उतर गया और लालची स्वभाव होने के कारण भूख से कहीं ज्यादा मूंगफलियां खा गया। मूंगफली पचने में भारी होती ही है। इसलिए शाम को उसके पेट में दर्द होने लगा। रातभर वह दर्द से कराहता रहा।

सवेरा हुआ तो झींगू बोला– आज हम भोजन की तलाश में दूर नहीं जाएंगे। तुम कुछ देर आराम करो। मैं तुम्हारे लिए खिचड़ी पकाऊँगा। हल्का खाना खाने से पेट ठीक हो जाएगा।

झींगू ने बड़ी मेहनत से खिचड़ी बनाने का सामान जुटाया। गुलगुल गिलहरी से दाल ली। चिम्पू खरगोश

से नमक व घी मंगवाया। भोलू कबूतर ने बर्तन दिये और मुनिया मुर्गी आग ले आई। चावल उसके पास में पहले से ही रखे थे। झींगू चूहा पास ही नदी से पानी ले आया। बड़ी मेहनत से खिचड़ी बनाई।

जब खिचड़ी बनकर तैयार हो गई तो झींगू ने ढींगू से कहा कि मैं नहाने जा रहा हूँ। लौटकर दोनों साथ-साथ खिचड़ी खाएंगे। तब तक तू आराम कर।

झींगू नहाने चला गया तो ढींगू ने सोचा कि झींगू तो देर से वापस आएगा तब तक मैं थोड़ी-सी खिचड़ी चखकर देख लूं कि कैसी बनी है? खिचड़ी चखी तो वह उसे बहुत स्वादिष्ट लगी। उसने थोड़ी सी और खा ली पर वह था बहुत लालची। थोड़ी-थोड़ी करके वह अपने हिस्से की सारी खिचड़ी खा गया।

फिर भी उसका मन नहीं भरा तो उसने झींगू के हिस्से की खिचड़ी भी खा ली। उसका पेट तो पहले ही खराब था। अब जो उसने इतनी सारी खिचड़ी अकेले ही खाली तो उसका पेट फूलने लगा वह दर्द से तड़पने लगा।

झींगू चूहा नहाकर लौटा तो ढींगू को तड़पता हुआ पाया। उसने 'आव देखा न ताव' झट से जंगल की डॉक्टर पूसी बिल्ली को बुलाने दौड़ पड़ा। वह खिचड़ी की बात ही भूल गया था।

ढींगू ने तड़पते हुए ढेर सारा पानी और पी लिया। पानी पिया ही था कि उसका पेट एकदम से फट गया और ढींगू चूहा वहीं ढेर हो गया।

झींगू चूहा जब डॉ. पूसी बिल्ली को लेकर आया और उसने ढींगू का यह हाल देखा तो उसकी आँखों में दुःख के आंसू भर आए। वह सोच रहा था– **ढींगू लालच न करता और मेरे हिस्से की खिचड़ी न खाता तो उसका यह हाल न होता।**

समाचार

# मंगल पर चिकनी मिट्टी के खनिजों का भंडार मिला

**वॉशिंगटन ( भाषा )**। नासा के क्यूरोसिटी मार्स रोवर को अपने अभियान के दौरान मंगल ग्रह पर चिकनी मिट्टी के खनिजों का अब तक का सबसे बड़ा भंडार मिला है। अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा ने एक बयान में बताया है कि क्यूरोसिटी रोवर ने मंगल के दो लक्ष्य स्थलों– 'एबेरलेडी' और 'किलमारी' से चट्टानों के नमूने लिए। बयान में कहा गया कि मंगल पर मिशन के 2405वें दिन (मंगल ग्रह के अनुसार) गत 12 मई को रोवर की एक नई सेल्फी में इसका पता चला। अंतरिक्ष एजेंसी ने कहा कि खनिज सम्पन्न यह क्षेत्र निम्न माउंट शार्प के बगल में है, जहाँ पर 2012 में क्यूरोसिटी यान ने लैंड किया था। क्यूरोसिटी यान माउंट शार्प पर यह अन्वेषण कर रहा है कि क्या अरबों साल पहले वहाँ पर जीवन के लिए उपयुक्त माहौल मौजूद था। चिकनी मिट्टी का निर्माण अकसर जल से होता है जो जीवन के लिए अनिवार्य है। रोवर के विशेष उपकरण केमिन (केमिस्ट्री और मिनरोलॉजी) ने चिकनी मिट्टी के खनिज वाले क्षेत्र में खुदाई से प्राप्त चट्टान के नमूने का पहली बार विश्लेषण किया है। केमिन को बेहद कम मात्रा में हेमेटाइट भी मिला है। यह लौह ऑक्साइड खनिज है जो उत्तर में लगे वेरा रूबिन रिज में भारी मात्रा में उपलब्ध है। नासा के मुताबिक गेल क्रेटर में एक समय प्रचुर मात्रा में पानी रहने के भी सबूत मिले हैं।

## बर्फ के साथ आसमान से बरसते हैं प्लास्टिक के अति सूक्ष्मकण

**बर्लिन ( भाषा )**। एक अध्ययन में सामने आया है कि प्लास्टिक के अति सूक्ष्म कण आर्कटिक और आल्पस जैसे सुदूर क्षेत्रों में भी बर्फ के साथ आसमान से बरसते हैं। पिछले कई सालों से समुद्र के पानी, पेयजल और यहाँ तक जानवरों में भी लगातार प्लास्टिक के अति सूक्ष्म कणों का पता चल रहा था। लेकिन अब जर्मनी के अल्फ्रेड वेगेनर इंस्टीट्यूट के अनुसंधानकर्ताओं ने पाया है कि प्लास्टिक के अति सूक्ष्म कण वायुमंडल के माध्यम से बहुत ही लम्बी दूरी तय कर लेते हैं और बाद में वर्षा, खासकर बर्फ के माध्यम से आसमान से नीचे आ जाते हैं।

हेल्गो, बावरिया, ब्रीमेन, स्विट्जरलैंड के आल्पस और आर्कटिक क्षेत्रों के बर्फ के नमूनों पर किए गए इस अध्ययन से इस बात की पुष्टि हुई है कि बर्फ के इन नमूनों में प्लास्टिक के अति सूक्ष्मकणों की उच्च मात्रा है। यहाँ तक आर्कटिक के सुदूर क्षेत्रों, स्वालबार्ड के द्वीप और तैरते बर्फ की चट्टानों में भी प्लास्टिक के अति सूक्ष्मकण थे।

साइंस एडवांसेज पत्रिका में प्रकाशित इस अध्ययन की प्रमुख मेलानी बर्गमैन ने कहा– 'यह निश्चित रूप से स्पष्ट हो गया है कि बर्फ में प्लास्टिक के अति सूक्ष्मकण हवा से आए।' उनकी इस संकल्पना को परागकण पर अतीत में हुए अनुसंधान से बल मिलता है, जिसमें विशेषज्ञों ने यह सत्यापित किया कि मध्य अक्षांश से पराग कण हवा में तैरते हुए आर्कटिक तक पहुँच गए। अनुसंधानकर्ताओं का कहना है कि ये पराग कण मोटे तौर पर प्लास्टिक के इन सूक्ष्मकणों के आकार के ही हैं।

– संकलनकर्ता : बबलू कुमार

# दादा जी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

दादा जी! दादा जी, आज तो हम कहानी सुनकर ही सोएंगें।

ठीक है, बच्चों! आओं, मैं तुम्हें एक कहानी सुनाता हूँ- एक राजा था। वह बहुत दयालु और सफाई पसन्द था।

जी दादा जी!

वह अपनी प्रजा की सुख-सुविधाओं का पूरा ध्यान रखता था। एक दिन वह वेश बदल कर अकेले ही नगर में घूमने निकल पड़ा।
शाम को जब वह वापस लौटा तो उसने अपने मंत्रियों और कर्मचारियों को बुलाया और उन्हें हर तरफ़ गंदगी होने के लिए खूब डांट लगाई।
राजा को नगर में गंदगी देखकर बहुत दुख हुआ। राजा जानता था कि गंदगी से कई तरह की बीमारियां फैल सकती हैं। उसने उसी समय सभी मंत्रियों को हाथों पूरे नगर की सफ़ाई करने का आदेश दिया।
सच दादा जी, राजा को सफाई बहुत पसंद थी?

सभी मंत्री घबरा गये। पूरे नगर की सफाई!

खुद तो नहीं की। लेकिन एक मंत्री ने इसके लिए राजा को एक बहुत अच्छा सुझाव दिया।

फिर क्या हुआ दादाजी? क्या मंत्रियों ने खुद सफाई की?

क्या सुझाव, दादा जी?

महाराज! मेरा मानना है कि हमें हमेशा स्वच्छता का ध्यान रखना चाहिए। इसके लिए हमें हर रोज सफाई करनी चाहिए। महाराज, आज अगर हम सफाई कर भी देंगे तो कल फ़िर प्रजा के लोग कूड़ा फेंक कर गंदगी फैला देंगे।

महाराज, मेरा सुझाव है कि आप प्रजा एक सभा में बुलाकर सफाई का महत्व बताएं व उनकी सुविधा के लिए कुछ सफाई कर्मचारी भी नियुक्त करवाएं, जिससे नित्य सफाई हो सके।

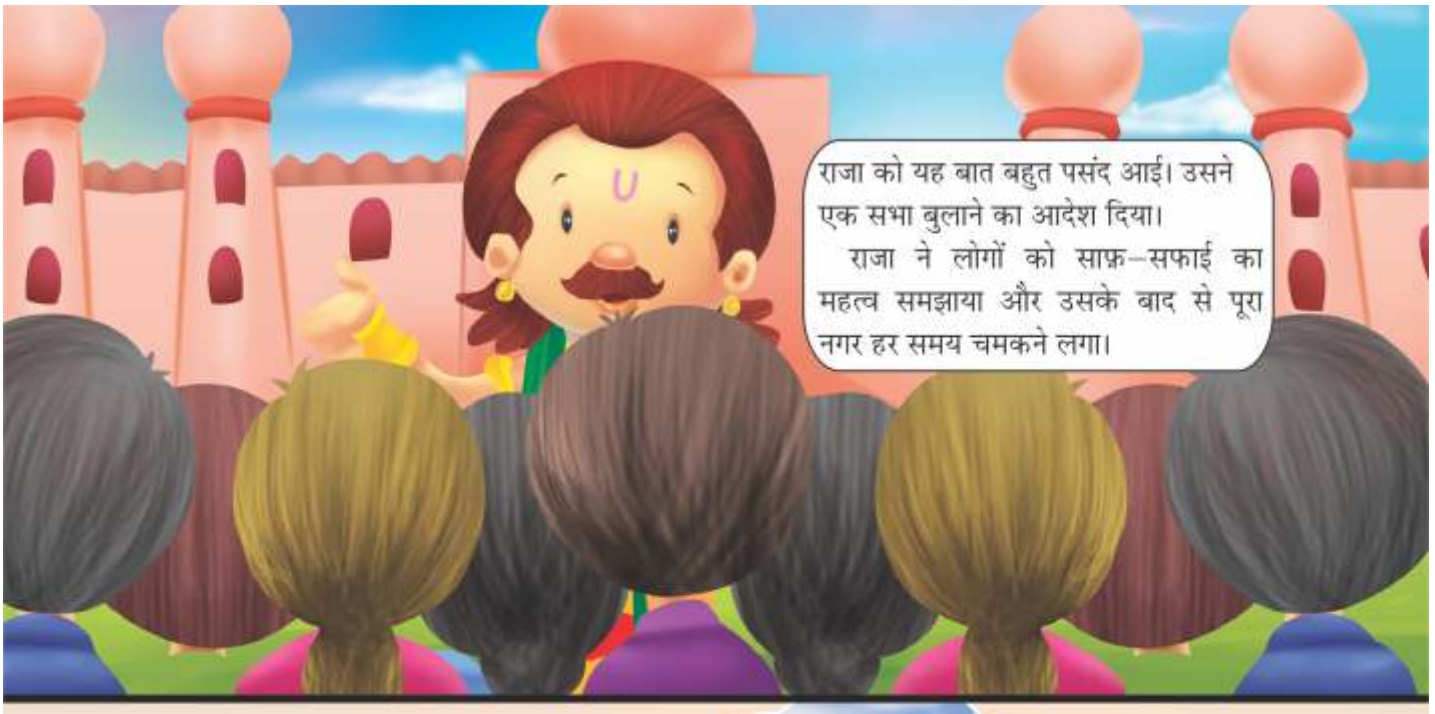
राजा को यह बात बहुत पसंद आई। उसने एक सभा बुलाने का आदेश दिया।
राजा ने लोगों को साफ़–सफाई का महत्व समझाया और उसके बाद से पूरा नगर हर समय चमकने लगा।

ठीक कहा आपने दादा जी!
बच्चों, यह कहानी हमें यह शिक्षा देती है कि हमें केवल अपने घर की ही नही बल्कि पूरे मोहल्ले व पूरे शहर की स्वच्छता का ध्यान रखना चाहिए। न तो हमें कूड़ा फैलाना चाहिए और न ही किसी को फैलाने देना चाहिए।

बच्चों, अब तो सोने चलोगे ना तुम।
शुभ रात्रि, बच्चों!
जी दादा जी, शुभ रात्रि!

लेख : राजकुमार जैन

# विनम्रता को जीवन शैली बनाइए

**विनम्रता** एक सहज मानवीय गुण है। यह एक ऐसा गुण है, जो न केवल मनुष्य की शारीरिक सुन्दरता के अभाव को पूर्ण करता है। बल्कि उसके व्यक्तित्व को नई ऊँचाईयां प्रदान करता है। विनम्रता और महानता सचमुच एक-दूसरे के पर्याय हैं। महान व्यक्ति अनिवार्य रूप से विनम्र होगा। यह सम्भव ही नहीं है कि कोई व्यक्ति विनम्र भी हो और गुणविहीन भी। मिरोवा एक अत्यन्त कुरूप व्यक्ति था किन्तु विनम्रता में उसका कोई सानी नहीं था। उसकी बातचीत की शैली इतनी सुन्दर और मुग्ध कर देने वाली थी कि उससे बात करते समय उसकी कुरूपता का एहसास ही नहीं होता था। उसके नम्र एवं सौम्य व्यवहार ने सबका मन मोह लिया था।

विनम्रता से आप सबकुछ पा सकते हैं जबकि सख्ती से आप खोने के अतिरिक्त कुछ नहीं पा सकते। महान सन्त व दार्शनिक कन्फ्यूशियस ने अपने शिष्यों को विनम्रता का महत्व एक सुन्दर उदाहरण द्वारा समझाया। उन्होंने अपने शिष्यों से पूछा कि हमारे मुँह में पहले दांत आए या जीभ?

शिष्यों ने उत्तर दिया– 'जीभ'।

सन्त ने फिर पूछा– पहले दांत नष्ट होंगे या जीभ? 'दांत'। शिष्यों का उत्तर था।

इसके बाद कन्फ्यूशियस ने अपने शिष्यों से कहा कि दांत जीभ के बाद आने के बावजूद भी पहले गिर जाते हैं क्योंकि वे सख्त हैं जबकि जीभ नम्र होने के कारण प्रारम्भ से अन्त तक बनी रहती है। विनय अथवा नम्रता संस्कारों व शिक्षा से प्राप्त होती है। हमें बच्चों में बचपन से ही ऐसे संस्कारों को भरना चाहिए, जिससे वे अपने व्यवहारिक जीवन में नम्रता का बर्ताव कर सकें। शिक्षा भी आदमी को शिष्ट व विनयशील बनने में मददगार होती है।

वस्तुत: विनम्रता जीवन शैली के लचीलेपन का ही दूसरा नाम हे। यही लचीलापन, हमें दूसरों के प्रति उदार व शिष्ट बनाता है। लचीलेपन में कठोरता की शक्ति समाहित होती है। विनम्रता दूसरों के दिलों को चुरा लेने की कला और आत्मविश्वास की पराकाष्ठा है।

नम्रता हमारा स्वयं से परिचय कराती है। हमें आत्म मूल्यांकन का समय व अवसर प्रदान करती है। हमारी धैर्य क्षमता में अभिवृद्धि कर अनुभवों को परिपक्व करती है। नम्रता आत्मविश्लेषण के द्वारा हमारी खामियों व कमजोरियों की ओर इंगित कर हमें सावधान करती है।

संवेदनाओं के विस्तार का दुरूह कार्य विनम्रता सहज व आसान बनाती है। किसी भी व्यक्ति से आत्मीय स्तर तक जुड़ पाने की प्रक्रिया में विनम्रता के योगदान को नकारा नहीं जा सकता। आप अपने मन की अनुभूति और अभिव्यक्ति कठोरता से कभी नहीं कर सकते। किसी के भी नजदीक जाने के लिए आपको कोमल, नम्र व संवेदनशील होना होगा।

विनम्रता एक सहज मानवीय वृति है। आप नम्रता

का पाखंड कर उसे छुपा नहीं सकते। दरअसल हमारी विनयशीलता या नम्रता विपरीत अवसरों या परिस्थितियों में ही कसौटी पर चढ़ती है। अपने प्रतिस्पर्धी की सफलता और अपनी विफलता को सहज रूप से लेने का गुण हमें विनम्रता से प्राप्त होता है। आप स्वयं हारकर भी विजेता को सच्चे मन से बधाई दे रहे हैं। यह सचमुच विनम्रता की एक ऊँचाई है। विनम्रता हमें सहज व न्यायसंगत होना सिखाती है। व्यक्ति का कद बढ़ने के साथ-साथ उसकी विनयशीलता बढ़ना एक स्वस्थ कारण है। ऐसा न हो कि सफलता आदमी को दम्भी व अहंकारी बना दे। ऐसे तो आदमी बहुत बौना होकर रह जायेगा। विनम्रता एक ऐसा गुण है जिसके रहते अन्य सारे गुण आप में अपने आप आ जायेंगे।

वार्तालाप करने का ढंग और मीठी बोली विनम्रता के प्रमुख अंग हैं। आपकी बोली व बातचीत का ढंग ऐसा होना चाहिए कि सामने वाला व्यक्ति आप से प्रभावित हुए बगैर न रह सके।

विनम्रता का क्षेत्र बहुत व्यापक है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में यह आपके काम आयेगी। आपका रहन-सहन, वेश-भूषा, चाल-चलन, आदर-सत्कार, सफर के समय या अन्यत्र कहीं भी। हमारा आचरण व व्यवहार नम्रतापूर्ण होना चाहिए क्योंकि यह व्यवहार हमारे व्यक्तिगत जीवन तक ही सीमित नहीं है बल्कि राष्ट्र की सभ्यता और संस्कृति का मापदण्ड भी है।

# कैसे दूर भगाओगे अगर छोटी-मोटी परेशानियां हों तो ....

- अगर मुँह में छाले हों तो पुदीने की पत्ती व मिश्री मिलाकर चबाएं एवं थूकें।
- आंवले के पत्तों के काढ़े से कुल्ले करें। छाले खत्म हो जाएंगे।
- दांतों का खट्टापन दूर करने के लिए पिसा हुआ नमक रगड़ो।
- यदि कभी हिचकी बन्द न हो रही हो तो पुदीने के पत्ते या नींबू की कुछ बूंदें चूस लो। हिचकी बन्द हो जायेगी।
- यदि होंठ फटने की शिकायत है तो मक्खन में नमक मिलाकर मलो।
- बिच्छू, बर्र या मधुमक्खी ने काट लिया हो तो प्याज का रस और नौसादर बराबर मात्रा में मिलाकर काटे हुए स्थान पर लगाओ। जहर का असर कम हो जायेगा एवं दर्द में भी आराम हो जायेगा।

– प्रस्तुति : विभा वर्मा

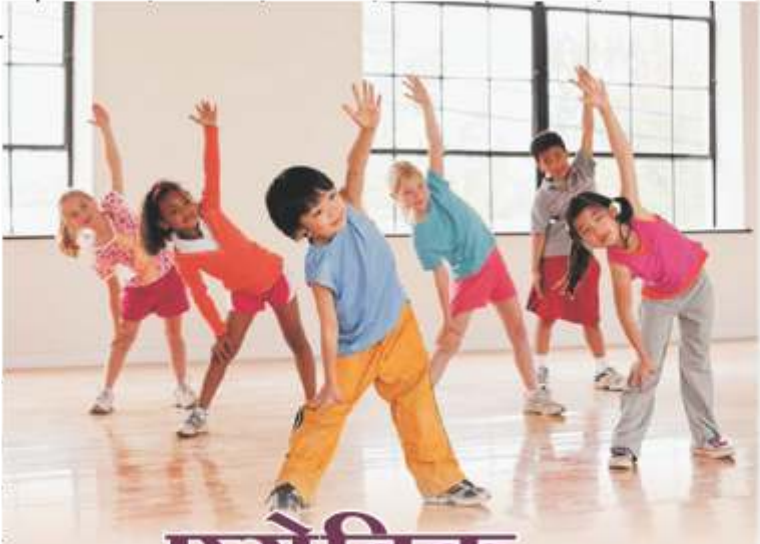

# एरोबिक क्या है?

एरोबिक को आज आधुनिक युग में जितनी लोकप्रियता मिली है उतनी अन्य व्यायामों को नहीं। एरोबिक कार्यक्रम श्रृंखला में नृत्य को अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान मिला हुआ है। अमेरिकी वैज्ञानिक डॉ. केनेथ कपूर ने लगभग 20 वर्ष पूर्व वायुसेना के नौजवानों को चुस्त-दुरुस्त बने रहने के लिए एरोबिक कार्यक्रम विकसित किया।

इनके अनुसार हमारे शरीर की रक्त-संचार प्रणाली हवा पर आधारित होती है। यही कारण है कि समुद्र के किनारे रहने वाले व्यक्ति स्वस्थ रहते हैं क्योंकि वहाँ पर समुद्री हवा की गति ज्यादा तीव्र और शुद्ध हुआ करती है। ऐसे ही एरोबिक कार्यक्रम भी पूर्णतया मनुष्य की रक्त-संचार प्रणाली को प्रभावित करने वाली व्यायाम प्रक्रिया है और इस व्यायाम से फेफड़े में पहुँचने वाली हवा शुद्ध होकर पूरी तरह ग्राह्य हो जाती है। एरोबिक से ऑक्सीजन मांसपेशियों तथा त्वचा और शरीर के अन्य अंगों पर बेहतर रक्त प्रवाह देकर उन्हें सिर्फ पुष्ट ही नहीं करते अपितु चर्बी को जमने से रोकता भी है।

– प्रस्तुति : विभा वर्मा (वाराणसी)

जानकारी : राधा नाचीज़

# नाड़ी पैंडूलम की खोज

***क्या आप जानते हैं कि नाड़ी पैंडूलम की खोज कैसे और किसने की थी?***

**गैलीलियों** ने यह प्रसिद्ध और बहुत उपयोगी खोज 1581 में अपनी नाड़ी के अनुभव से की थी। गैलीलियो उस समय किशोर था। जब उसने पीसा कैथेड्रल में नौकरी करते हुए यह अनुभव किया कि एक दीपाधार (लैम्प) हवा में झूल रहा है। उसने यह पता लगाया कि दीपाधार दोनों तरफ जाने में बराबर समय लेता है। यद्यपि उस समय मापने के लिये कोई पैमाना नहीं होता था इसलिये गैलीलियो ने दोनों तरफ से दीपाधार के जाने की प्रक्रिया को अपनी नाड़ी और दिल की धड़कन से गिनकर मापा था। उसने पाया कि दोनों तरफ से नाड़ी की धड़कन संख्या बराबर थी। बाद में चलकर गैलीलियो की यही खोज घड़ी बनाने के काम आई जिससे सही समय का पता चलता है।

बाल कविता : राधेलाल 'नवचक्र'

# विनती

हम हैं छोटे-छोटे बालक,
भगवन आप जगत के पालक।
हमारी विनती सुन लो आज,
कहते हमें न आती लाज।।

हमें ज्ञान दो, बल भी देना,
सभी बुराई तू हर लेना।
अपनापन का भाव जगा दो,
सब से नेह करना सिखा दो।।

सूरज, सागर और सितारे,
लगते हैं सब कितने प्यारे।
तेरी महिमा बड़ी निराली,
सभी तरफ फैली हरियाली।।

शीश झुकाकर, हाथ जोड़ हम,
करते रोज तुम्हें प्रणाम।
हम हैं छोटे-छोटे बालक,
भोले-भाले नटखट बालक।।

बाल कविता : हरजीत निषाद

# शिक्षक कक्षा में नित आते

गाँव शहर स्कूल खुले हैं।
बच्चे पढ़ने को निकले हैं।
लगते प्यारे और भले हैं।
ज्ञान ज्योति ले साथ चले हैं।

विद्यालय विद्या के मंदिर।
चुन लो मोती ज्ञान समंदर।
शिक्षा मिलती इनके अन्दर।
सबका जीवन बनता सुन्दर।

शिक्षक कक्षा में नित आते।
हिंदी इंग्लिश गणित पढ़ाते।
समझ न आये फिर समझाते।
शिक्षक बच्चों के मन भाते।

शिक्षक अच्छी बात बताते।
सुन्दर संस्कार सिखलाते।
निंदा नफरत से बच जाते।
प्यार नम्रता सब अपनाते।

कहानी : डॉ. दर्शन सिंह 'आश्ट'

# लौट आई हरियाली

**सिमरन** अपने ननिहाल आया हुआ था। उसे स्कूल से एक सप्ताह की छुट्टियां हो चुकी थीं। उसे अपने मामा जी के साथ बहुत स्नेह था। सिमरन मामा जी के साथ हर रोज सुबह सैर के लिए निकल जाता था। दोनों लम्बी सैर करके लौटते।

एक दिन सिमरन मामा जी के साथ सैर के लिये जा रहा था। रास्ते में सड़क के किनारे पर लगे एक छोटे से जामुन के पेड़ पर सिमरन की दृष्टि पड़ी। उसका तना अजीब-सा था। मानो किसी ने पूरे तने पर मिट्टी का लेप किया हो। वह पेड़ के पास आया और ध्यानपूर्वक उसे देखने लगा। दीमक ने जामुन के पेड़ पर बुरी तरह से हमला किया हुआ था। पेड़ सूखता जा रहा था। उसकी टहनियां और पत्ते बेहद उदास लग रहे थे। मानो कह रहे हों 'कोई हमें बचा लो, कोई हमें बचा लो।'

मामा जी सैर करते थोड़ा आगे निकले। उन्होंने रूककर सिमरन को आवाज दी– 'अरे क्या जाकर देख रहे हो? जल्दी आओ। तुम्हारी सैर पूरी नहीं होगी और मैं भी अपनी दुकान से लेट हो जाऊँगा।'

सिमरन बोला– 'मामा जी, आप जाईये। मैं बाद में आता हूँ।'

मामा जी बोले– 'अरे तुमने इस सूखे पेड़ से क्या लेना-देना है? मुझे मालूम है, इसको दीमक लगी हुई है। जल्दी आओ।'

सिमरन थोड़ी ऊँची आवाज में बोला– 'लेकिन मामा जी, दीमक के कारण देखिये। यह छोटा-सा पेड़ सूखता जा रहा है। इसकी टहनियों और पत्तों का भी हाल देखिये।'

मामा जी सकते में आ गये और बोले– 'चलो तुम करते रहो परोपकार। बचाते रहो इस सूखे पेड़ को। मैं चला सैर को।' यह कहकर मामा जी आगे बढ़ गये।

सिमरन ने आसपास देखा। उसे कुछ दूर एक सूखी टहनी दिखाई दी। उसने टहनी उठाई और सबसे पहले उस पेड़ की जड़ से तने के इर्दगिर्द की मिट्टी को उतारा। वह यह देखकर दंग रह गया कि दीमक अन्दर से पेड़ के तने को बुरी तरह खा चुकी थी। वह खोखला हो रहा था। ऐसे लग रहा था मानो किसी ने तलवार से उस छोटे से पेड़ के तने पर निरंतर प्रहार करके उसका छिलका उतार दिया हो। सिमरन यह देखकर और भी हैरान हुआ कि दीमक ने अन्दर ही अन्दर तने के ऊपर तक जाने के लिये अपने-अपने गहरे रास्ते बनाये हुए थे। दीमक की ऐसी कारीगिरी को देखकर सिमरन हैरान रह गया।

सिमरन निरंतर तने के साथ चिपकी हुई मिट्टी को सूखी टहनी के साथ उतारता रहा। कितनी ही दीमक नीचे गिर चुकी थी।

कुछ देर बाद सिमरन के मामा जी के दोस्त बलदेव भी सैर करते हुए वहाँ से निकले। उन्होंने

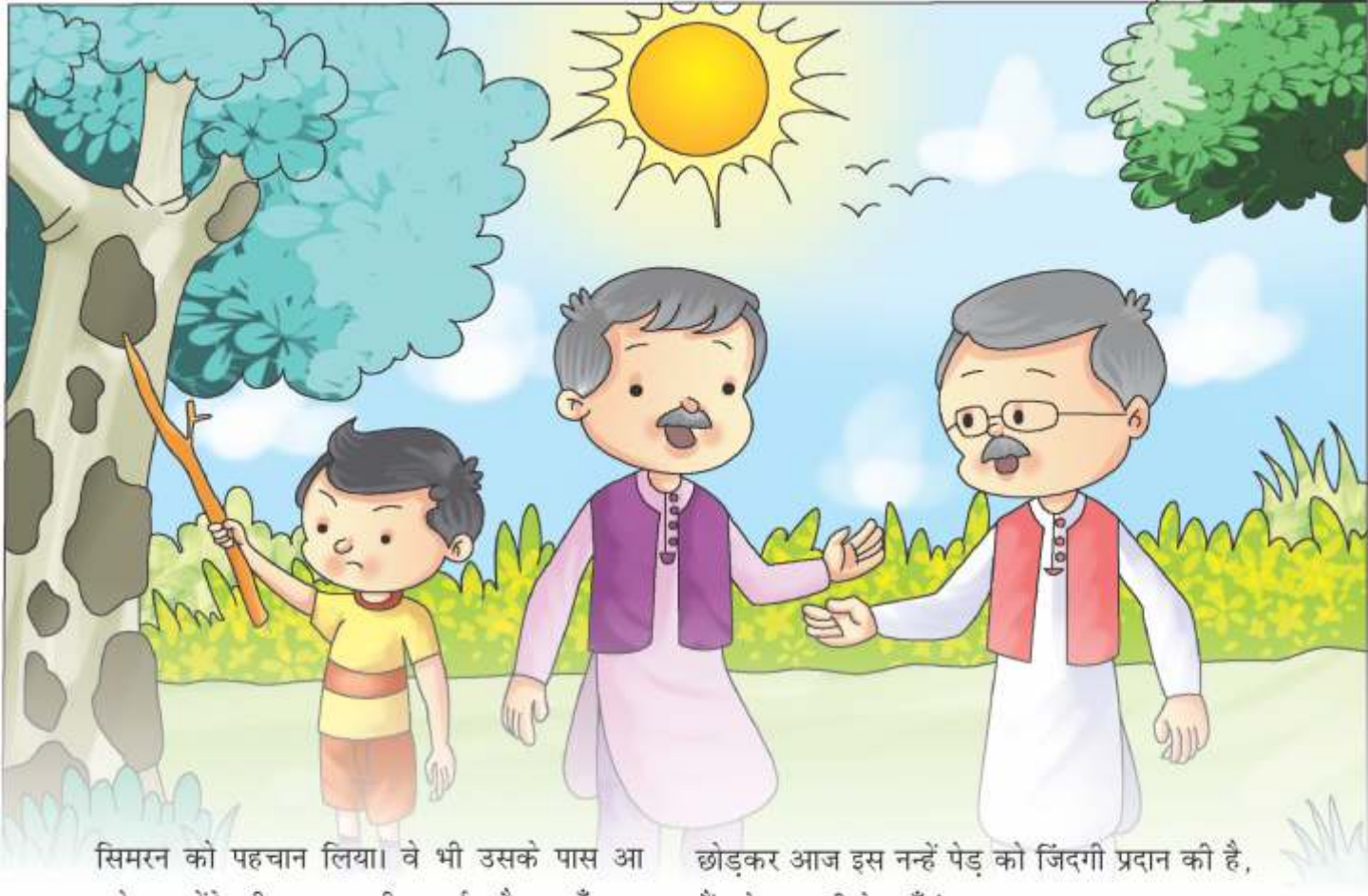

सिमरन को पहचान लिया। वे भी उसके पास आ गये। उन्होंने भी एक टहनी उठाई और जहाँ तक सिमरन का हाथ नहीं पहुँचता था। वहाँ तक तने पर चिपकी मिट्टी और दीमक को साफ किया।

इतने में मामा जी सैर करके वापिस लौटे। उन्होंने देखा सिमरन के साथ उनके दोस्त बलदेव भी दीमक उतारने में व्यस्त थे।

सिमरन के मामा जी व्यंग्य से अपने दोस्त बलदेव से बोले– 'बलदेव जी, तुम भी सिमरन की तरह फिजूल काम में पड़ गये। सैर करनी भूल गये हो क्या?'

मामा जी के दोस्त उनसे हाथ मिलाते हुए बोले– 'प्रकाश जी, प्रकृति को बचाना बहुत बड़ा पुण्य है। हम हर रोज यहाँ से सैर करते हुए गुजरते हैं। लेकिन हमने कभी सोचा है कि इस पेड़ के कारण ही हम जिंदा हैं। जो काम हमें करना चाहिये था। वह इस लड़के ने कर दिया है। तुम्हारे भांजे ने अपनी सैर छोड़कर आज इस नन्हें पेड़ को जिंदगी प्रदान की है, मैं इसे शाबाशी देता हूँ।'

मामा जी अपने दोस्त की बात सुनकर शर्मिन्दा हो गये। अब तक तना साफ किया जा चुका था।

कल से स्कूल खुल रहा था। इसलिये सिमरन वापिस अपने घर लौट गया था।

अगले दिन सिमरन के मामा जी बाजार से दीमक की दवा ले आये और पानी में मिलाकर जामुन के पेड़ की जड़ में डाल दी।

दो महीने बाद जब सिमरन फिर ननिहाल आया तो यह देखकर खुश हो गया कि जामुन के पेड़ पर हरियाली छाई हुई थी। उसकी टहनियां और पत्ते हवा में झूम रहे थे।

सिमरन जामुन के पास खड़ा पेड़ को निहार रहा था। उसे लगा जैसे झूमती हुई टहनियां और पत्ते सिमरन को कह रहे हों– 'धन्यवाद सिमरन।'

सिमरन के चेहरे पर अनोखी मुस्कान थी।

बाल निबन्ध : अंकुश्री

# पर्यावरण और ईंधन

ईंधन का हमारे पर्यावरण से सीधा सम्बन्ध है। भोजन पकाने के लिये शहरों में तो आमतौर पर गैस का प्रयोग किया जाता है परन्तु गाँवों एवं दूर-दराज के क्षेत्रों में ईंधन के रूप में सबसे अधिक गोबर, लकड़ी और कोयले का प्रयोग किया जाता है।

गाँवों में जलावन के रूप में गोबर का प्रयोग बहुत सामान्य है। गोबर की बहुत बड़ी मात्रा उपला या पिंडी बनाकर जला दी जाती है। लेकिन पठारी क्षेत्रों में गोबर को जलाया नहीं जाता। शायद उस क्षेत्र में लकड़ी की बहुलता के कारण ऐसा होता हो। गोबर बहुत उपयोगी खाद है। इसको जलाने से खेतों में खाद की कमी हो जाती है।

गोबर को ईंधन की तरह गैस के रूप में प्रयोग किया जाता है। यह कार्य गोबर गैस के माध्यम से किया जाता है। इसके लिये गोबर गैस संयंत्र लगाना आवश्यक है। गोबर गैस संयंत्र में गोबर सड़कर अच्छी खाद बन जाती है। संयंत्र से निकली हुई गैस का ईंधन के रूप में प्रयोग कर खाना बनाया जाता है और रोशनी प्राप्त की जाती है। इस तरह गोबर का गैस और ईंधन दोनों तरह से प्रयोग हो जाता है।

ईंधन के रूप में गोबर का प्रयोग नहीं करने से यह खाद के रूप में प्रयुक्त हो सकता है। इससे खाद के लिये रसायनों पर निर्भर नहीं होना पड़ेगा। रासायनिक खाद से भले अच्छी फसल मिल जाये लेकिन इससे खेत की अपनी उर्वरता खत्म हो जाती है। यह पर्यावरण के लिये अहितकर है। इसलिये गोबर जलाना पर्यावरण के लिये अहितकारी माना जाता है।

कोयला या पत्थर कोयला ईंधन का एक प्रमुख माध्यम है। कोयला एक प्रकार का खनिज है, जो खदान से निकलता है। इसके प्रयोग से विषैली गैसें निकलती हैं। कोयला से धुआं भी अधिक निकलता है। इसलिये पर्यावरण के लिये कोयला जलाना हितकर नहीं माना जाता।

सर्वाधिक सुलभ ईंधन लकड़ी है। हालांकि अब इसकी सुलभता पर भी प्रश्नचिह्न लग गया है। ऐसी स्थिति वनों और बागानों की लगातार कटाई से हुई है। फिर भी ईंधन के रूप में लकड़ी का प्रयोग अधिक लोग करते हैं।

ईंधन के लिये पेड़ों को काटना जरूरी नहीं है। पेड़ों की छंटाई से ही भरपूर ईंधन मिल जाता है। लेकिन इसके लिये सबसे बड़ी शर्त है पेड़ों का होना। कुछ पेड़ ऐसे हैं, जो सिर्फ ईंधन के ही काम आते हैं। ऐसे पेड़ों को लगाना भी आसान है। ऐसे पेड़ों को जरूर लगाना चाहिए।

खेत-खलिहानों में कुछ घासफूस मिल जाते हैं। गाँवों में पेड़ की सूखी पत्तियां मिल जाती हैं। इनका उपयोग भी ईंधन के रूप में किया जाता है। देखने में इनकी मात्रा अधिक लगती है। लेकिन प्रयोग में यह बहुत कम पड़ती है। यदि जलाने के बदले इन्हें सड़ा दिया जाये तो इनसे अच्छी खाद मिल जायेगी। यह हमारे पर्यावरण के हित में होगा।

उन्नत चूल्हा बहुत प्रचलित हो चुका है। इसके प्रयोग से ईंधन बरबाद नहीं होता है। इस चूल्हे की एक और बड़ी विशेषता यह है कि इसमें धुआं नहीं निकलता। इसीलिये उन्नत चूल्हे का एक नाम धुआंरहित चूल्हा भी है। पर्यावरण की सुरक्षा की दिशा में उन्नत चूल्हे का प्रयोग बहुत कारगर है।

इस तरह हम देखते हैं कि ईंधन कई प्रकार के होते हैं। प्रयोग में भी उनकी मात्रा में विभिन्नता पायी जाती है। उनके प्रयोग के ढंग पर उनकी खपत निर्भर करती है। इन सबका मिलाजुला असर हमारे पर्यावरण पर पड़ता है।

दो बाल कविताएं : महेन्द्र सिंह शेखावत 'उत्साही'

# बात बड़ों की

बोली मम्मी सर्दी आई,
सोना बिट्टू ओढ़ रजाई।

कानों पर तुम रखना मफलर,
और बदन पर पहनों स्वेटर।

घर से बाहर जब भी जाओ,
सीख बड़ों की सदा निभाओ।

सर्दी तुमको ना जकड़ेगी,
बीमारी भी ना पकड़ेगी।

बात बड़ों की यदि न मानों,
पड़ो बीमार और तुम जानो।

# जैसी करनी वैसी भरनी

जन-जन की सब
करो भलाई,
मिलकर बांटो
पीर पराई।

दुख में सबके
साथ निभाओ,
कभी न दुखियों
को ठुकराओ।

सत्य-धर्म के
पथ पर चलना,
मिलजुल सबसे
हमको रहना।

पाप-कपट ना
हिंसा करनी,
जैसी करनी
वैसी भरनी।

# पहेलियां

1. तीन रंग का सुन्दर पक्षी,
नील गगन में भरे उड़ान।
यह है सबकी आँखों का तारा,
हम सब करते इसका सम्मान।।

2. लाल है पर सेब नहीं,
बहादुर है पर सिपाही नहीं।
शास्त्री है पर पंडित नहीं,
जो बताए वो मूर्ख नहीं।।

3. हाथ-पैर में पड़ी जंजीर,
फिर भी दौड़ लगाती।
टेढ़े-मेढ़े रास्तों से,
गाँव-गाँव घूमती।।

4. दाने-दाने गिनती जाती,
दादी अम्मां रोज फिराती।

5. न बीज न गुठली,
छिलका उतारो तो हलवे की डली।

6. काला-काला गोल तवा सा,
रोटी नहीं पकाऊं।
सुई के तन में चुभते ही,
गाना तुम्हें सुनाऊं।।

7. धन दौलत से बड़ी है यह,
सब चीजों से ऊपर है यह।
जो पाये इसे पंडित बन जाये,
इसे बिन पाये मूर्ख रह जाये।।

8. उजली धरती काले बीज,
हमको देती सुन्दर सीख।

9. ऐसा कौनसा दान है,
जो रोशनी देता है?

10. किस राही का काम,
प्यास बुझाना है?

11. कौनसा यन्त्र किसी को,
पसन्द नहीं आता?

12. शब्द एक ही मतलब दो,
एक भाषा एक रहने को।

प्रस्तुति : रुचि गुप्ता

**उत्तर :**
1. तिरंगा, 2. लाल बहादुर शास्त्री, 3. साइकिल, 4. माला, 5. केला, 6. ग्रामोफोन, 7. विद्या, 8. पुस्तक, 9. रोशनदान, 10. सुराही, 11. षड्यन्त्र, 12. बंगला।

कहानी : प्रमीला गुप्ता

# नया सवेरा

घुम्मर गाँव के लोग बहुत सीधे-सादे थे। पढ़ाई-लिखाई से कोसो दूर, उनके लिए काला अक्षर भैंस बराबर था। पढ़ा-लिखा धनपत साहूकार उनकी इस कमजोरी का फायदा उठा रहा था। कहने को वह साहूकार था पर था बड़ा लालची। जरूरत पड़ने पर वह गाँववालों के घर-जमीन आदि गिरवी रखकर ऊँची ब्याज दर पर रकम उधार दे देता था। झूठी लिखा-पढ़ी पर वह उनसे अंगूठा लगवा लेता था। एक बार उधार ले लेने के बाद गाँववाला जिन्दगी भर उसके कर्ज तले दबा रहता।

सज्जन सिंह की गाँव में राशन की छोटी-सी दुकान थी। थोड़ा हिसाब-किताब करना जानता था। ईमानदारी से चार पैसे कमाकर अपने परिवार का भरण-पोषण करता और खुश रहता। पढ़ा-लिखा होने के कारण वह धनपत की काली करतूतों को जानता था। एक दिन उसने सरपंच के पास जाकर धनपत साहूकार की शिकायत की। सरपंच खुद धनपत की बेईमानी का बराबर का हिस्सेदार था। उसने सज्जन सिंह की बातों को सुना-अनसुना कर दिया।

थक-हारकर सज्जन सिंह ने जिला मुख्याधिकारी के पास जाने का फैसला किया। उसने उनके पास जाकर कहा– श्रीमान्! गाँव का सरपंच और धनपत साहूकार मिलकर भोले-भाले अनपढ़ गाँववालों को लूट रहे हैं। वे दोनों दिन पर दिन अमीर होते जा रहे हैं

और गरीब गाँववालों के लिए पेट भरना मुश्किल हो गया है। उनकी सारी कमाई कर्ज का सूद भरने में ही खत्म हो जाती है। अनपढ़ गाँववाले मजबूरी में झूठी लिखा-पढ़ी पर अंगूठा लगा देते हैं।

मुख्याधिकारी ने सज्जन सिंह की बातों को ध्यान से सुना। उसने अपने दो कर्मचारियों को धनपत साहूकार और सरपंच की चुपचाप जांच-पड़ताल करने के लिए भेज दिया। कर्मचारियों ने आकर बताया कि सज्जन सिंह की सभी बातें सही थीं। मुख्याधिकारी ने तुरन्त दोनों की शिकायत पुलिस अधीक्षक से की। दोनों को बंदी बनाकर अदालत में पेश किया गया। दोनों पक्षों की दलीलें सुनने के बाद जज ने फैसला सुनाया– धनपत साहूकार और सरपंच ने ग्रामीणों से जालसाजी और बेईमानी की है। बेईमानी से हड़पा गया धन ग्रामीणों को वापस करें।

न्यायालय के फैसले से सज्जन सिंह और गाँववाले बहुत खुश थे। अब मुख्याधिकारी ने आदेश दिया– जिले के प्रत्येक गाँव में बाल-विद्यालय तथा प्रौढ़-शिक्षा केन्द्रों की जल्दी से जल्दी स्थापना कर उनमें योग्य शिक्षक नियुक्त किए जाएं।

यह सुनकर सज्जन सिंह हैरानी से पूछने लगा– श्रीमान् अपराधियों को सजा मिल गई। अब बाल-विद्यालय तथा प्रौढ़-शिक्षा केन्द्र खोलने से क्या लाभ होगा?

मुख्याधिकारी ने हँसकर बताया– सज्जन सिंह, तुम जानते हो कि गाँव के ज्यादातर लोग अनपढ़ और सीधे-सादे होते हैं। धनपत साहूकार और सरपंच को सजा देने से समस्या मिट नहीं जाएगी। अनपढ़ गाँववालों को कोई भी धनपत जैसा लालची व बेईमान साहूकार ठग सकता है। इसलिए गाँव के बच्चों और बुजुर्गों का शिक्षित होना जरूरी है।

सज्जन सिंह खुश होकर बोला– श्रीमान्, यह तो आपने बहुत दूर की बात सोची है। हम सब गाँववाले आपके इस उपकार को हमेशा याद रखेंगें

–यह उपकार नहीं, मेरा कर्तव्य है। यही नहीं, मैंने अपने उच्चाधिकारियों के पास के गाँवों में ग्रामीण बैंक खोलने का प्रस्ताव भेजा है। ऐसा हो जाने पर गाँववाले कर्ज के लिए साहूकारों के चंगुल में नहीं फंसेंगे। मुख्याधिकारी ने बताया।

सज्जन सिंह की खुशी का ठिकाना नहीं था। अब उसके गाँव में अज्ञानता का अंधकार नहीं रहेगा। ज्ञान का प्रकाश फैलेगा। एक नया सवेरा सारे गाँव को खुशियों से भर देगा।

दो बाल कविताएं : कमलसिंह चौहान

# ओस की बूंदें

ओस की प्यारी बूंदें बिखरी।
फूल और कलियां भी निखरी।
भौरे ने जब अपना मुंह खोला,
टपकी बूंद लग गयी चकरी।

मोती जैसी बूंदें चमकी।
तितली देख उन्हें बिचकी।
फूलों ने जब पास बुलाया,
मधुमक्खी तो पहले लपकी।

ठंडी सुखद बयार चली।
शीत ऋतु भी कितनी भली।
पहने सबने स्वेटर देखो,
रंग-बिरंगी अब लगती गली।

किरणों को बादल ने रोका।
रवि को भी फूलों ने टोका।
सुखद सलोना मौसम देखो,
ठंडी हवा का आया झोंका।

# तितली रानी

फूलों के संग तितली बोली।
पत्तों के संग कलियां डोली।
चिड़िया भी चीं-चीं कर घूमी,
खुशबू ने अब खोली झोली।

मधुमक्खी भी रस में डूबी।
फूलों की है अद्‌भुत खूबी।
किरणें उतरी आसमान से,
ओस की बूंदें फूल पर डोली।

धरती पर खुशहाली छाई।
सरिता ने भी ली अंगड़ाई।
व्यर्थ न तोड़ो फूल ये बच्चों,
तितली रानी हँसकर बोली।

गीत प्यार के गाना सीखो।
फूलों सा मुस्कुराना सीखो।
सुख में दुख में संग रहो,
कोयल कुहू कुहू कर बोली।

लेख :
अभिनंदन शुक्ल

## एक विलक्षण जीव

# भ्रामक बिच्छू

**ध्रुवीय** प्रदेशों को छोड़कर विश्व के प्रायः सभी भागों में एक छोटा-सा जीव पाया जाता है, जो देखने में बिच्छू के समान लगता है। यह जीव बिच्छू से सम्बद्ध है, किन्तु वास्तव में बिच्छू नहीं है। इसे भ्रामक बिच्छू कहते हैं। भ्रामक बिच्छू की एक हजार से अधिक जातियां हैं। इनमें से कुछ जातियां भारत में भी पायी जाती हैं। अधिकांश जातियों के भ्रामक बिच्छू घास-फूस एवं कूड़े-कचरे के ढ़ेरों, सूखी पत्तियों अथवा पत्थरों के नीचे रहते हैं किन्तु कुछ जातियों के बिच्छू घरों तथा कार्यालयों की पुरानी, धूलभरी फाइलों अथवा रद्दी कागजों में भी देखने को मिलते हैं। इन्हें 'बुक स्कार्पियन' अर्थात् 'पुस्तकों का बिच्छू' कहते हैं। भ्रामक बिच्छू का आकार इतना छोटा होता है कि प्रायः इस पर हमारा ध्यान नहीं जाता।

भ्रामक बिच्छू की लम्बाई 4 मिलीमीटर से लेकर 7 मिलीमीटर तक एवं रंग हल्का मटमैला, पीलापन लिये हुए भूरा-सा होता है। भ्रामक बिच्छू असली बिच्छू से पूरी तरह भिन्न होता है किन्तु इसमें असली बिच्छू की बहुत-सी विशेषताएं पायी जाती हैं। भ्रामक बिच्छू के असली बिच्छू के समान संडासी की तरह दो भुजाएं होती हैं, जिनके सिरे चिमटे के समान होते हैं। इसके मध्य भाग में चिमटे के समान आठ पैर होते हैं किन्तु पूंछ और डंक नहीं होते। भ्रामक बिच्छू प्रायः एक ही स्थान पर सुस्त पड़ा रहता है, किन्तु कभी-कभी केकड़े के समान चलता भी है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि खतरे के समय यह जिस तेजी से आगे बढ़ता है, उसी तेजी से उल्टा अथवा पीछे की ओर भी भाग सकता है। कुछ जातियों के भ्रामक बिच्छू इतनी तेजी से उल्टा भागते हैं कि सरलता से विश्वास नहीं होता।

भ्रामक बिच्छू के पेट के पास दो तंतुग्रन्थियां होती हैं जो इसके जबड़ों से सम्बद्ध होती हैं। यह अपने जीवनकाल में चार से सात बार तक केंचुल बदलता है। केंचुल बदलते समय इसे विशेष सुरक्षा की आवश्यकता होती है। अतः केंचुल बदलने के पूर्व यह अपने तंतु से इगलू की तरह का एक घोंसला या घर तैयार करता है। इसके लिये यह सर्वप्रथम उचित स्थान की तलाश करता है और फिर घास-फूस के तिनके तथा लकड़ी और मिट्टी के छोटे-छोटे कण एकत्रित करके इन्हें गोलाकार दीवार के रूप में जमीन पर बिछाता है। कुछ ऊँची दीवार तैयार हो जाने पर यह उसके ऊपर सीमेंट के समान एक परत, अपने तंतु की परत चढ़ाता है। इस तरह अनेक बार करने पर उल्टी टोकरी की तरह का एक घर तैयार हो जाता है किन्तु घर तैयार हो जाने के बाद यह अपने तंतु से उसे भीतर से बन्द कर देता है। इसका घर इतना बड़ा होता है कि यह उसमें आराम से लम्बी नींद सो सकता है तथा केंचुल उतार सकता है। भ्रामक बिच्छू घर की आवश्यकता समाप्त हो जाने पर स्वतंत्र विचरण हेतु इसे तोड़कर बाहर आ जाता है और आवश्यकता पड़ने पर पुनः नया घर बनाता है।

भ्रामक बिच्छू का प्रमुख भोजन विभिन्न प्रकार के छोटे-छोटे कीड़े-मकोड़े तथा इनके नवजात बच्चे हैं। इसके छोटे से मुँह में जो भी जीव आ जाता है, यह उसे अपना आहार बना लेता है। यह असली बिच्छू के समान अपने शिकार का रस चूसकर नहीं छोड़ देता बल्कि पूरा का पूरा खा जाता है।

भ्रामक बिच्छू एक घुमन्तू जीव है। इसकी एक रोचक विशेषता यह है कि यह प्रायः बड़ी जाति की मक्खियों की टांगे पकड़कर दूर-दराज के स्थानों की सैर के लिये निकल जाता है। कभी-कभी तो आठ-दस भ्रामक बिच्छू एक ही मक्खी की टांगे पकड़कर उड़ते हुए देखे गये हैं। सम्भवतः यही कारण है कि यह बहुत बड़े क्षेत्र में फैल गये हैं।

जीव-जगत (लेख) : परशुराम शुक्ल

# एक रोचक शिकारी जीव
# समुद्री कनखजूरा

कनखजूरे से हम सभी परिचित हैं। यह गर्म स्थानों का जीव है और विश्व के अधिकांश भागों में पाया जाता है। इसकी 2750 से अधिक जातियां एवं उपजातियां हैं। सभी प्रकार के कनखजूरों के आकार रंग एवं शिकार करने के ढंग में बहुत अन्तर होता है। ये प्राय: कच्चे घरों की जमीन के नीचे, दीवारों की दरारों, पथरीली चट्टानों एवं वृक्षों के कोटरों आदि में रहते हैं किन्तु इनकी एक जाति ऐसी भी है जो पानी में पायी जाती है अर्थात् यह नदियों, झीलों, सागरों और महासागरों में रहती है। इसे पानी का कनखजूरा कहते हैं। पानी के कनखजूरे की दो उपजातियां हैं– खारे पानी के कनखजूरे को समुद्री कनखजूरा भी कहते हैं। समुद्री कनखजूरा भ्रमणशील होता है और कभी-कभी मूंगे की दीवारों की दरारों, पत्थरों की नीचे तथा आवरण वाले मृत समुद्री जीवों के आवरण के भीतर अपना निवास बनाता है। इसे प्राय: ज्वारभाटे के समय सागर तटों पर भी देखा जा सकता है।

कनखजूरे की दोनों जातियां भारत में पायी जाती हैं। ताजे पानी का कनखजूरा उड़ीसा की चिल्का झील में तथा कुछ नदियों में पर्याप्त संख्या में मिलता है जबकि खारे पानी का कनखजूरा भारत के आसपास के सागरों और महासागरों में देखा जा सकता है।

सामान्य कनखजूरे के समान ही समुद्री कनखजूरे की भी विभिन्न उपजातियों की शारीरिक संरचना अलग-अलग होती है। कुछ समुद्री कनखजूरे गेंद की तरह गोल होते हैं तो कुछ फीते की तरह चपटे। कुछ का आकार बहुत छोटा होता है तो कुछ बीस सेन्टीमीटर तक लम्बे होते हैं। समुद्री कनखजूरे की शारीरिक संरचना सामान्य कनखजूरे के समान होती है किन्तु इसके पैर सामान्य कनखजूरे की तरह लम्बे, पतले और नुकीले नहीं होते। जीव वैज्ञानिकों के अनुसार इसके पैर शरीर का बढ़ा हुआ भाग है।

समुद्री कनखजूरे के शरीर के समान ही इसके सभी पैरों की संरचना एक सी नहीं होती। इसके शरीर का आगे का भाग चौड़ा और मोटा होता है तथा यह धीरे-धीरे पतला होता जाता है एवं अन्त में बहुत पतला और नुकीला हो जाता है। इसी शरीर के अनुपात में ही इसके पैर भी छोटे होते जाते हैं। इसके प्रत्येक पैर में तीन कोने होते हैं एवं प्रत्येक पैर का बाहर की ओर निकला हुआ कोना नुकीला होता है और इसमें छोटे-छोटे दो नुकीले बाल होते हैं। इसके शरीर पर ऊपर की ओर अर्थात् पूरी पीठ पर शल्क होते हैं। इन शल्कों की संरचना इस प्रकार की होती है कि यह ताजी हवा प्राप्त करने के लिए इन्हें ऊपर उठा सकता है तथा नीचे गिरा सकता है। इसके आगे सामने वाले भाग में सिर होता है और सिर पर अनेक प्रकार के संवेदनशील अंग होते हैं।

समुद्री कनखजूरा एक अरीढ़धारी, मांसाहारी और शिकारी जीव है। इसके जबड़े बहुत मजबूत होते हैं। इन्हीं जबड़ों की सहायता से यह विभिन्न प्रकार के समुद्री जीव-जन्तुओं का शिकार करता है। समुद्री कनखजूरे का शिकार करने का ढंग बड़ा रोचक होता है। यह पहले अपने शिकार की खोज करता है फिर अचानक तेजी से झपटकर उसे अपने मजबूत जबड़ों में दबोच लेता है।

# विज्ञान प्रश्नोत्तरी

**प्रश्न :** पृथ्वी गतिशील होते हुए भी स्थिर क्यों लगती है?

**उत्तर :** सौरमण्डल में ग्रहों की संख्या नौ है जिनमें से एक पृथ्वी भी है। इन ग्रहों का मुखिया सूर्य है तथा सभी ग्रह सूर्य के चारों ओर गति करते रहते हैं।

पृथ्वी के अपनी धुरी पर लगातार घूमते रहने के कारण भी तुम्हें इसके घूमने का अंदाजा भला क्यों नहीं हो पाता?

दरअसल, पृथ्वी एक समान गति से घूमती है। किसी वस्तु की गति का अनुमान उसमें होने वाले परिवर्तन से ज्ञात हो सकता है। हाँ, कभी-कभी सूर्य की बदलती हुई स्थिति से पृथ्वी की गति का आभास अवश्य होता है।

**प्रश्न :** बंदूक की गोली लक्ष्य से टकराने पर गर्म क्यों हो जाती है?

**उत्तर :** जब बंदूक से गोली निकलती है तो उसका वेग अत्यधिक होता है। इसी कारण से गोली में ऊर्जा (गतिज ऊर्जा) भी ज्यादा रहती है। दूसरी ओर, गोली लक्ष्य से टकराते ही अपनी ऊर्जा खो देती है। साथ ही उसका वेग भी शून्य हो जाता है। परिणामस्वरूप, बंदूक की गोली लक्ष्य से टकराने पर गर्म हो जाती है।

**प्रश्न :** ट्यूबलाइट की रोशनी में छत का पंखा उल्टा घूमता हुआ क्यों दिखाई देता है?

**उत्तर :** रात्रि के समय तुम कमरे में जो ट्यूबलाइट जलाते हो, उससे प्रकाश की किरणें रूक-रूककर निकलती हैं। लेकिन तुम्हें इसका अनुभव नहीं हो पाता। तुम्हें तो बस ट्यूबलाइट से रोशनी लगातार निकलती प्रतीत होती है। जब पंखे के ब्लेडों के घूमने की आवृत्ति ट्यूबलाइट से निकलने वाली रोशनी की आवृत्ति से कम या ज्यादा हो जाती है तो छत का पंखा उल्टा घूमता हुआ दिखाई देता है।

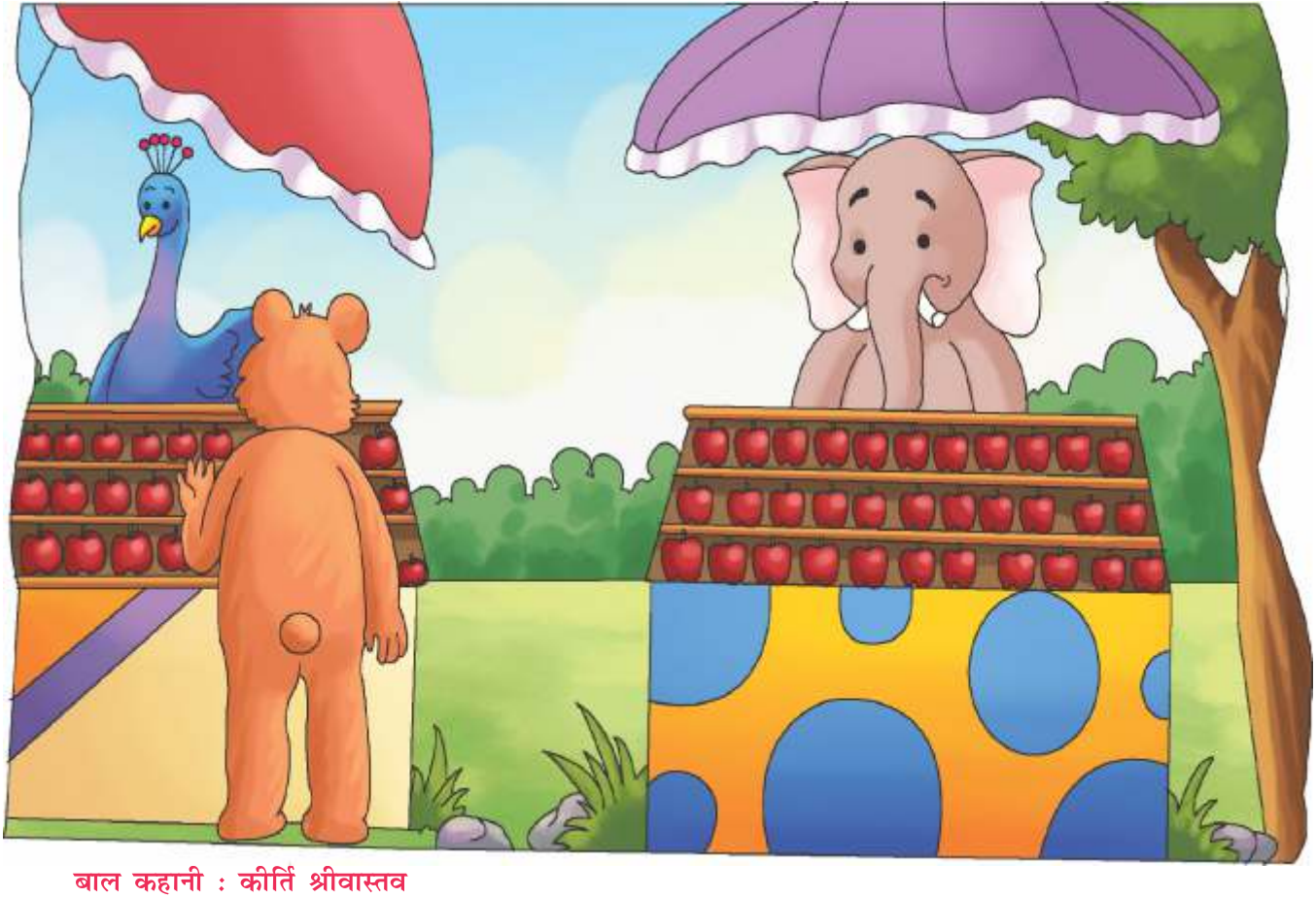

बाल कहानी : कीर्ति श्रीवास्तव

# हथिनी की होशियारी

**जगमग** हाथी और पीकू मोर की भारतवन में फलों की दुकान थी। जहाँ पीकू मोर की दुकान के फल रोज बिक जाते थे वहीं जगमग हाथी के फल यूं ही रखे रहते थे। रोज शाम को पीकू मोर अपनी दुकान बंद करके खुशी-खुशी अपने घर जाता तो जगमग हाथी उदास होकर घर लौटता।

'आज फिर खाली हाथ आ गए।' हथिनी ने कहा।

'क्या करूं? पीकू की दुकान से ही सब फल खरीदते हैं। मेरी दुकान से नहीं।'

'कुछ तो कारण होगा कि भारतवन के और उसके आसपास वन के जानवर भी पीकू की दुकान से फल खरीदते हैं तुम्हारी से नहीं।' हथिनी ने गुस्से से कहा।

'मुझे क्या पता। मैं भी समय से दुकान खोलता हूँ और बन्द करता हूँ। जैसे पीकू मोर करता है। जबकि मैं ज्यादा देर खुली रखता हूँ।' जगमग हाथी बोला।

'ठीक है, खाना खाओ और सो जाओ। कल सुबह दुकान भी जाना है।'

अगले दिन हाथी के दुकान जाने के बाद हथिनी ने सोचा कि चलो पता तो करूँ कि आखिर क्यों पीकू मोर के फल बिक जाते हैं और हमारे नहीं।

जगमग हाथी के दुकान जाने के बाद हथिनी भी चुपके से उसके पीछे-पीछे चलने लगी और दुकान

के पास ही पेड़ों के पीछे छुपकर दोनों की दुकानों पर नजर रखने लगी। दिन भर बैठने के बाद उसने जो देखा उसे देखकर उसकी आंखें फटी की फटी रह गईं और उसने अपना माथा ठोक लिया।

शाम को जब हाथी उदास होकर आया तो वो कुछ न बोली। उसे खाना दिया और सो गई। अगले दिन उसने हाथी से कहा– 'आज मैं दुकान पर जाऊंगी तुम घर पर ही रहो।'

हाथी और हथिनी में थोड़ी बहस हुई और उसके बाद हाथी मान गया। हथिनी के जाने के बाद हाथी ने सोचा चलो शाम को देखते है। मैं तो आराम करता हूँ।

शाम को जब हथिनी को खुश होकर झूमते हुए आते देखा तो हाथी सोचने लगा लो फल नहीं बिकने से ये तो एक दिन में ही पागल हो गई।

'क्या हुआ? नहीं बिके फल।'

तभी हथिनी ने पैसों से भरा बैग निकाल कर हाथी को दिखाया।

ये देखते ही हाथी चौक गया। 'ये चमत्कार कैसे हुआ? इतने पैसे कहाँ से आये? कहीं तुमने पीकू के पैसे तो नहीं चुरा लिये?'

'कहाँ से आये मतलब? और ये क्या। क्या मैं तुम्हें चोर लगती हूँ? आज मैंने सभी फल बेच दिए हैं और ये उसी के पैसे हैं। समझे।'

'ये कैसे हुआ? मैं तो बेच ही नहीं पाता और तुमने सभी फल बेच दिए।'

'हाँ, बेच दिए।'

'पर कैसे?'

'वो ऐसे कि कल मैंने तुम्हारी चौकीदारी की और देखा कि पीकू मोर के फल क्यों बिक जाते हैं और तुम्हारे क्यों नही। जब देखा तो मैंने अपना माथा पकड़ लिया।'

'क्यों, ऐसा क्या देखा तुमने?'

'मैंने देखा कि अच्छे फल तो तुम खा लेते हो और खराब, बासे फल दुकान पर रख देते हो। जब ग्राहक आता है तो खराब, बासे फल देखते ही वह पीकू की दुकान पर चला जाता है।' हथिनी गुस्से में बोले जा रही थी।

'आज मैंने एक भी फल नहीं खाये। तो देखो सभी ताजे फल बेचकर आई।'

'मुझे माफ कर दो। कल से मैं ऐसा नहीं करूंगा। अपनी जीभ पर कंट्रोल रखूंगा और ताजे फल बेचूंगा।'

हथिनी ने हाथी को माफ कर दिया और अगले दिन से हाथी भी सभी फल बेचकर घर आने लगा।

लघु कथा : राधेलाल 'नवचक्र'

# तलवार और ढाल

**सुबह-सुबह** एक लोहार घर से बाहर निकला। रास्ते में उसे लोहे के दो टुकड़े मिल गये। उसने उसे उठा लिया। घर लौटने पर लोहार ने एक टुकड़े से तलवार बनायी और दूसरे से ढाल बना ली।

कुछ दिनों के बाद एक योद्धा आकर तलवार और ढाल खरीद कर ले गया। उस योद्धा ने कई युद्धों में उसका उपयोग किया। एक युद्ध में तलवार टूट गयी, मगर ढाल ज्यों की त्यों सही सलामत रही। टूटी तलवार को योद्धा घर ले आया और उसे रख दिया। ढाल भी पास ही पड़ी थी।

रात में जब सब सो गये, तलवार कराहती हुई ढाल से बोली– 'बहन देखो, मेरी कैसी दुर्दशा हो गयी? और तुम तो ज्यों की त्यों सुरक्षित हो?'

'हम दोनों में एक फर्क जो है।' ढाल ने कहा।

'वह क्या?' तलवार पूछ बैठी।

'तू सदैव किसी को मारने-काटने का काम करती रही है और मैं बचाने का।'

ढाल ने फर्क बताते हुए आगे कहा– 'ख्याल रखो, मारने वाले से बचाने वाले की आयु ज्यादा होती है।'

'ऐसा ही लगता है, तुम सच बोल रही हो।'

# उड़ने वाली गिलहरी

**गिलहरियां** तो आपने देखी ही हैं जो कि हमारे घर की छतों पर बेरोकटोक घूमती रहती हैं या पेड़ों पर उछलकूद करती रहती हैं। लेकिन क्या आपने कभी उड़ने वाली गिलहरी को देखा या उसके बारे में सुना है।

दुनिया में उड़ने वाली गिलहरी की कोई 45 प्रजातियां हैं। इनमें से हमारे देश में 12 प्रजातियां पाई जाती हैं। वास्तव में ये पक्षियों की भांति उड़ती तो नहीं हैं बल्कि ग्लाइड करती हैं। इनके अगले से लेकर पिछले पंजों तक पतली झिल्ली होती है जो कि उसे ग्लाइड करने में मदद करती है। जब ये पेड़ से छलांग लगाती हैं तो पैरों को खोल देती हैं। इससे झिल्ली पैराशूट की तरह काम करती है। एक बार में यह 20 से 40 फीट तक ग्लाइड कर सकती हैं।

उड़न गिलहरी रोडेंट यानि कुतरने वाले जीवों के उस परिवार की जंतु है जो ग्लाइडिंग की क्षमता रखते हैं। वैज्ञानिक भाषा में इसे टेरोमायली या पेटौरियस्टाइनी कहते हैं।

यह गिलहरी निशाचर होती है यानि रात को भोजन की तलाश में निकलती है। यह फल, फूल, बीज, गोंद, मशरूम, पक्षियों के अंडे, मकड़ी तथा कीड़े-मकोड़ों को भोजन बनाती है।

गौरतलब है कि अब से कुछ दशक पहले कांकेर के जंगलों में यह प्रजाति बड़ी संख्या में पाई जाती थी लेकिन अब इनकी संख्या तेजी से घट रही है।

प्रस्तुति : किरण बाला

# किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

चलो, हम नदी के किनारे चलते हैं, खूब मज़े करेंगे।

लो, अब करो खूब मज़े। साफ़ सुथरे होकर बाहर निकलना।

बचाओ! बचाओ! मुझे तैरना नहीं आता।

रूको! रूको! मैं आ रही हूँ तुम्हें बचाने।

किट्टी, तुमने अच्छा नहीं किया, अगर चिंटू को कुछ हो जाता तो! चलो, अब हम सब घर चलते हैं।

मैं भाग-भाग कर सबसे पहले पहुँच जाती हूँ घर!

अरे! बचाओ!
बचाओ! मैं कीचड़
में गिर गई।

हा, हा, हा, चलो अब किट्टी को नदी में फेंक
देते हैं। इसके लिए साफ होना बहुत ज़रूरी है।

किट्टी को अब समझ आया
'जो बोवोगे वही काटोगे।'

– संग्रहकर्ता : जगतार 'चमन' (अनूपगढ़)

# कभी न भूलो

★ वृक्ष अपने सिर पर गर्मी सहता है पर आनी छाया में दूसरों का ताप दूर करता है।

– **तुलसीदास**

★ न तो कोई किसी का मित्र है, न ही शत्रु है। व्यवहार से ही मित्र या शत्रु बनते हैं। – **हितोपदेश**

★ खून की नदियां बहाने के बजाय किसी के आंसू पोंछने में अधिक सच्ची प्रसिद्धि है। – **बायरन**

★ जो पवित्र तथा साहसी है, वही जगत में सब कुछ कर सकता है।

★ अचल निष्ठा ही महान कार्यों की जननी है।

– **विवेकानंद**

★ मनुष्य अपना स्वामी नहीं। वह परिस्थितियों का दास है। – **भगवतीचरण वर्मा**

★ हम किसी पहाड़ को नहीं जीतते बल्कि अपने आप पर विजय पाते हैं। – **एडमंड हिलेरी**

★ सभ्यता सुव्यवस्था के साथ जन्मती है, स्वतंत्रता के साथ बड़ी होती है और अव्यस्था के साथ मर जाती है। – **विल डुरान्ट**

★ यदि एक शत्रु दया दिखाता है तो स्वजन के समान उसका आदर करना चाहिए। यदि एक मित्र भी हानि पहुँचाता है तो उसे शत्रु समझना चाहिए।

★ घृणा शैतान का काम है, क्षमा मनुष्य का धर्म है और प्रेम करना देवताओं का गुण है।

– **भर्तृहरि**

★ जीवन में दो ही व्यक्ति असफल होते हैं, एक वे जो सोचते हैं पर करते नहीं। दूसरे जो करते हैं पर सोचते नहीं। – **आचार्य श्रीराम शर्मा**

★ हमारे सारे सपने सच हो सकते हैं। अगर हम उन्हें आगे बढ़ाने का साहस करते हैं।

– **वॉल्ट डिज्नी**

★ अपने जीवन का ध्येय बनाओ और इसके बाद अपनी सारी शारीरिक और मानसिक शक्ति जो भगवान ने तुम्हें दी है, उसमें लगा दो।

– **कार्लाइल**

★ मनुष्य की सबसे अच्छी मित्र उसकी दस अंगुलियां हैं। – **राबर्ट कोलियर**

★ प्रयासरत मनुष्य को हमेशा उम्मीद रहती है और वह प्रयास करने की और कोशिश करता है।

– **गेटे**

★ शक्ति शारीरिक क्षमता से नहीं आती है बल्कि यह एक अदम्य इच्छाशक्ति से आती है।

– **महात्मा गाँधी**

★ मानव जीवन में लगन बड़े महत्व की वस्तु है। जिसमें लगन है वह बूढ़ा भी जवान है। जिसमें लगन नहीं है वह जवान भी मृतक है। – **प्रेमचंद**

★ अभिमान की उपेक्षा नम्रता से अधिक लाभ होता है। – **भगवान गौतम बुद्ध**

★ अहंकार, क्रोध, प्रमाद, रोग और आलस्य– इन पाँच कारणों से व्यक्ति शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकता। – **उत्तराध्ययन**

बाल कविता : कीर्ति श्रीवास्तव

# बुजुर्ग

बुजुर्गों का आदर करना सीख।
सदा मिलेगा उनका आशीष।
वो होते वृक्ष स्वरूप।
करते सदा हमारी रक्षा।

प्रेम की डोर से वे बांधते।
घर भी हमारा है संवारते।
उनसे मिलते हमें संस्कार।
जीवन के होते वे आधार।

सेवा सदा उनकी करना।
कभी न उनको दूर रखना।
उनकी छत्र छाया में।
खुद को सदा सुरक्षित रखना।

बाल कविता : प्रियंका प्रियदर्शनी

## मेरी बहन
# बिल्लो रानी

गुड़िया जैसी मेरी बहना,
माने ये हम सबका कहना।

बिल्लो रानी बड़ी सयानी,
पीती दूध बताती पानी।

हँसती रहती खिल-खिल,
दिनभर खेले सबसे हिलमिल।

खाना खाती झटपट,
दौड़ लगाती सरपट।

बिल्लो रानी ऐसी नटखट,
करती रहती हरदम खटपट।

जरा नहीं करती आराम,
बस खुश रहना उसका काम।

बाल कविता : श्रवण कुमार

# मेरी गुड़िया

जादू की लगती है पुड़िया।
परियों-सी है मेरी गुड़िया।

फ्रॉक में उसके जड़े सितारे।
टिम-टिम-टिम करते हैं सारे।

सुंदर-सी एक छड़ी हाथ में।
जादू करती बात-बात में।

उसके पास बड़ा-सा झोला।
चलती लेकर उड़न खटोला।

कर जाती जो लेती ठान।
उसको भाती नई उड़ान।

लेख : किरण बाला

# पेंग्विन एक विचित्र पक्षी

**पेंग्विन** स्फेनिस्कीफोर्मेस कुल का समुद्री पक्षी है जो अनेक विचित्रताएं लिए हुए है। इसके नर और मादा एक जैसे ही दिखाई देते हैं जिन्हें आसानी से पहचानना मुश्किल है। आइये, जानते हैं इस पक्षी को करीब से।

पेंग्विन की कोई 16 प्रजातियां पाई जाती हैं। प्रजाति के आधार पर इनके आकार में थोड़ा अंतर होता है। आमतौर पर ये दक्षिण ध्रुव के तटों पर तथा दक्षिणी महासागर के किनारों पर पाए जाते हैं लेकिन इसकी कुछ जातियां भूमध्य रेखा तक समुद्री क्षेत्रों में भी देखी गई हैं।

किसी समय पेंग्विन उड़ते भी थे, लेकिन आज उनके उड़ने की क्षमता समाप्त हो चुकी है लेकिन वे कुशल तैराक बन गए हैं। वे अपने पंखों का चप्पू की भांति इस्तेमाल करते हैं। वे 27 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से तैर सकते हैं।

आखिर इनके उड़ने की क्षमता क्यों लुप्त हो गई? दरअसल, ये ऐसे सुनसान इलाकों में रहते थे जहाँ इनका कोई प्राकृतिक शत्रु नहीं था। इसलिए वे निडर होकर जमीन पर या पानी में अपना समय बिताते थे। परिणामस्वरूप इन्हें अपने पंखों के इस्तेमाल की आवश्यकता ही नहीं रही। धीरे-धीरे इनके पंख छोटे होते गए।

इनका अधिकांश जीवन बर्फीली समुद्र में तैरते हुए बीतता है। इतनी जबरदस्त ठंड कैसे झेल लेते हैं ये? वास्तव में इनके शरीर पर परों की एक मोटी परत चढ़ी होती है जो उन्हें मौसम के प्रभाव से बचाती है। पंखों की विशेषता यह है कि इसमें पानी नहीं घुस सकता। इसके अतिरिक्त इनके शरीर में चर्बी की एक तह और होती है जो पूरे शरीर को बाहरी प्रभाव से बचाती है तथा शरीर की गर्मी को बनाए रखती है।

पेंग्विन झुंड में रहते हैं तथा एक दूसरे की सुरक्षा का पूरा ध्यान रखते हैं। अपने समूह का कोई सदस्य बिछुड़ न जाए इसके लिए वे एक खास तरह की आवाज निकालते हैं। इस प्रकार वे काफी दूर तक निकल जाते हैं। इनके झुंड में हजारों पेंग्विन हो सकते हैं।

पेंग्विन को तरह-तरह के खेल खेलने में बड़ा आनंद आता है। खासतौर पर जब वे युवा होते हैं।

पेंग्विन की कुछ प्रजातियां वर्ष में एक बार तथा कुछ दो बार प्रजनन करती हैं। प्रजनन काल के दौरान वे भूखी रहती हैं। हाँ, इसके पहले वे खूब खाती हैं ताकि उनके शरीर में चर्बी इकट्ठी हो जाए क्योंकि भूखे रहने के दौरान उन्हें अपनी इस चर्बी पर ही निर्भर रहना पड़ता है। प्रजनन के लिए वे किसी परंपरागत जगह पर जाते है। वहीं उनका जोड़ा बनता है और मिलकर घोंसला बनाते हैं। जमीन पर बने इस घोंसले में मादा अंडे देती है जिसे दोनों मिलकर सेते हैं। 40 दिनों के बाद उनके चूजे निकलते हैं जिनकी देखभाल की जिम्मेदारी दोनों निभाते हैं।

पेंग्विन की एक प्रजाति समुद्री है जो अंटार्कटिका के बर्फीले क्षेत्रों में रहती है। मादा बर्फ की झिल्ली पर अंडे देती है। जिसे नर अपने पैरों के ऊपर रखकर सेता है। इस प्रक्रिया में लगभग दो माह का समय लगता है। तब तक वह निश्चल खड़ा रहता है। यह नर पेंग्विन के लिए परीक्षा की घड़ी होती है।

शिशु पेंग्विन को काफी भूख लगती है जिसके लिए उनके माता-पिता को काफी मशक्कत करनी पड़ती है। लेकिन इस दौरान घोंसले में उनके बच्चे बदल जाते हैं। होता यह है कि जब उनके माता-पिता उनके लिए भोजन की जुगाड़ में बाहर जाते हैं तो बच्चे अपने घोंसले से बाहर निकल आते हैं और रास्ता भटककर दूसरे घोंसले में चले जाते हैं। जब उनके माता-पिता भोजन लेकर आते हैं तो घोंसले में मौजूद शिशु को वे अपना ही मानकर भोजन कराते हैं। पेंग्विन में अपने-पराए का भाव

नहीं होता वे एक-दूसरे से बहुत प्रेम करते हैं।

पेंग्विन की चाल बड़ी अटपटी होती है। उनके पैर छोटे होते हैं जो उनकी चाल को अटपटी बना देते हैं। वैसे ये आदमी की भांति अपने शरीर और सिर को सीधा रखकर चलते हैं।

समुद्र में पेंग्विन के प्राकृतिक दुश्मन भी कम नहीं है। सील, शार्क व्हेल आदि पेंग्विन को अपना भोजन बनाते हैं।

यद्यपि पेंग्विन एक शांत पक्षी है लेकिन अपने बचाव के लिए वह हमला भी बोल सकता है। वे इंसानों से डरते नहीं है इसलिए यदि इंसान उनके करीब आ भी जाए तो वे अडोल रूप में खड़े रहते हैं।

# पशु-पक्षियों की अद्भुत बातें

- कंगारू का नवजात शिशु 2.5 सेंटीमीटर अर्थात् एक इंच लम्बा होता है।
- घोंघा बलेड की धार पर बिना घायल हुए चल सकता है।
- मगरमच्छ अपने दांतों में फंसे मांस को निकालने के लिए चिड़ियों की मदद लेता है और उन्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचाता।
- ऑस्ट्रेलिया का 'सेमू' नामक पक्षी पत्थर खा लेता है और उसे आराम से पचा भी लेता है।

# बच्चों के अपनाने योग्य बातें

- अच्छे नागरिक बनना।
- व्यवहारिक जीवन में सुधार लाना।
- हर एक के दु:ख-दर्द में काम आना।
- माता-पिता की आज्ञा का पालन करते हुए उनकी सेवा करना।
- माता-पिता की कमाई के मुताबिक खर्च करना।
- मानव मात्र से प्यार करना।

प्रेरक प्रसंग : दिनेश राय

# सजग महात्मा

**एक** बार की बात है। एक महात्मा जंगल से गुजर रहे थे। महात्मा ने देखा कि एक सर्प और एक नेवला आपस में लड़ रहे हैं। सर्प खून से लथ-पथ हो चुका था। महात्मा को सर्प पर दया आ गई। महात्मा कुछ सोचते हुए उनकी ओर बढ़े तभी नेवले ने महात्मा को देख लिया और सर्प को छोड़कर भाग गया। सर्प काफी क्रोध में था। वह सामने खड़े महात्मा को काटने के लिए झपटा। तब महात्मा ने किसी प्रकार से भाग कर अपनी जान बचायी।

कुछ दिन बाद महात्मा फिर उसी जंगल से गुजर रहे थे। उनको जोर की प्यास लगी थी। वह जंगल में एक कुएं के पास गये। उन्होंने देखा कुछ चरवाहे कुएं में पत्थर के टुकड़ों से किसी चीज को मार रहे थे। जब पास जाकर उन्होंने देखा कि वही सर्प कुएँ में गिरा पड़ा है। वह पत्थर के टुकड़ों से मार खाकर लहू-लुहान हो चुका था। कुएँ में फिसलन होने की वजह से वह कुएं के बाहर भी नहीं आ पा रहा था।

सर्प ने महात्मा से कहा- कृपया मुझे बाहर निकालो नहीं तो ये बच्चे मुझे मार डालेंगे अथवा मैं पानी में डूब कर मर जाऊँगा। महात्मा को सर्प पर दया आ गई। महात्मा ने डोरी से कमण्डल बाँधा और कुएं में लटका दिया। सर्प बड़ी सरलता से उस कमण्डल में

बैठ गया। महात्मा ने जैसे ही उसे बाहर निकाला सर्प ने कहा– महात्मा मुझे एक सपेरा पकड़ रहा था और मैं भागता हुआ इस कुएँ में गिर पड़ा। जिन्होंने मुझे घायल किया वे भी इन्सान थे। इसलिए अब मेरी दुश्मनी सभी इन्सानों से है और तुम भी एक इन्सान हो, इसलिए अब मैं तुमको काटूँगा। सर्प ने महात्मा के पैर को लपेट लिया। इससे पहले कि वह काटता महात्मा ने तेजी से अपना पैर झटक दिया और सर्प पुनः कुएं में जा गिरा।

सर्प ने पुनः बाहर निकालने के लिए विनती की तो महात्मा ने कहा– तुम कृपा के पात्र नहीं हो, मैं तुम्हारी सहायता करके देख चुका हूँ। अब तुम चाहे जीयो या मरो; मैं तो चला। अभी महात्मा कुछ ही दूर गये थे कि उनके मन ने उन्हें सर्प की सहायता करने के लिए रोक लिया।

महात्मा कुएँ के पास जाकर सर्प से बोले– हे सर्प मैं कुएं में अपनी डोरी और कमण्डल लटका देता हूँ और तुम उसे पकड़कर बाहर निकल आना। मैं तुम्हें स्वयं बाहर नहीं निकालूँगा। जब तक तुम बाहर निकलोगे मैं काफी दूर जा चुका होऊँगा। मरता क्या न करता। सर्प धीरे–धीरे रस्सी के सहारे ऊपर चढ़ने लगा। महात्मा एक पेड़ पर चढ़ गये। वह छिपकर सारा नज़ारा देखने लगे। कुछ ही देर में सर्प बाहर निकला। वह काफी क्रोध में दिख रहा था। उसने अपना फन उठाकर चारों तरफ देखा। मानों किसी को ढूँढ रहा हो। कुछ देर बाद जब सर्प चला गया तब महात्मा नीचे उतरे और अपना कमण्डल साफ करके पानी पिया और अपनी मंजिल की तरफ चल पड़े।

**– दुष्ट की संगति से दूर रहें। उनकी सहायता करने से पहले अपने बचाव पर भी विचार अवश्य करें।**

# पढ़ो और हँसो

एक लड़का ऐसे ही फोन घुमा रहा था कि किसी किराने की दुकान का नम्बर मिल गया।

लड़का : आपके पास चीनी है?

दुकानदार : हाँ है?

लड़का : घी है?

दुकानदार : हाँ है?

लड़का : सूजी है?

दुकानदार : हाँ है?

लड़का : फिर आप हलवा बनाकर मेरे घर भेज दो।

---

गृहणी ने कहा– रामू आज तुमने बहुत कीमती फूलदान तोड़ दिया। आज के बाद ऐसी गलती की तो मार-मार के सिर गंजा कर दूंगी, समझे।

–जी समझ गया।

–क्या समझे?

–यही कि मालिक भी किसी ऐसी ही गलती का अंजाम भुगत रहे हैं।

---

गुड़िया : (अमन से) भैया मैं बर्फ खाऊंगी।

अमन : गुड़िया सर्दियों में बर्फ नहीं खाते हैं।

गुड़िया : भैया, मैं बर्फ गर्म करके खा लूंगी।

---

चौपट और पोपट जेल तोड़कर भाग निकले और दो बोरे पड़े देखकर उनमें छुप गये। पुलिस कांस्टेबल को शक होने पर उसने पोपट के बोरे को लात मारी।

पोपट : भौं-भौं।

बोरे में कुत्ता समझकर कांस्टेबल ने फिर दूसरे बोरे को लात मारी तो चौपट चिल्लाकर बोला– मेरे में आलू हैं।

---

चींटी : (हाथी से) तुम मुझे अपनी शर्ट दे दो।

हाथी : क्यों?

चींटी : मेरी बेटी की शादी है। टैंट लगाना है।

---

संगीत के शिक्षक ने शिष्य से पूछा– तुम किस ताल में विशारद हो?

शिष्य बोला– जी, हड़ताल में।

---

चित्रकार : (मकान मालिक से) एक दिन लोग याद करेंगे कि इसी मकान में वो महान चित्रकार रहता था।

मकान मालिक : अगर शाम तक तुमने पिछले तीन महीनों का पूरा किराया नहीं चुकाया तो वह दिन आज ही आ जाएगा।

– गुरचरण आनन्द (लुधियाना)

शिक्षक : (छात्रों से) बच्चों बताओ, पुराने जमाने में रावण की लंका को सोने की लंका क्यों कहते थे?

एक छात्र : सर, क्योंकि कुम्भकर्ण हमेशा सोता रहता था इसलिए उसे सोने की लंका कहते थे।

---

पंडित जी : (नेता पुत्र से) बेटा, सबसे बड़ा दान कौन-सा होता है बताओ?

नेता पुत्र : पंडित जी, मेरे पिताजी कहते हैं कि सबसे बड़ा दान मतदान होता है।

---

टीचर : ऋतु, आज तुम स्कूल देर से क्यों आई हो?

ऋतु : सर, मैं घर से दस रुपये का सिक्का लेकर चली थी, पर रास्ते में वह कहीं खो गया। मैं उसे ही ढूंढ़ने में लग गई थी।

टीचर : और शिवांगी, तुम देर से क्यों आई हो?

शिवांगी : मैं, उस सिक्के को पैर के नीचे दबाकर खड़ी थी।

---

माँ : (अपनी बेटी से) तुम इतिहास में पास क्यों नहीं हुई?

बेटी : मम्मी जी, टीचर मुझसे बहुत पुराने समय के सवाल पूछती है। जब मैं पैदा भी नहीं हुई थी।

**– रोशन तोतलानी ( वडसा )**

तीन चीटिंयां एक रास्ते पर बैठी बातें कर रही थीं कि इतने में वहाँ से एक हाथी गुजरा। तीनों चीटिंयों में से एक चींटी से रहा नहीं गया तो वह चींटी हाथी से बोली– ऐ लम्बी सूंड वाले हमसे कुश्ती करोगे?

यह देखकर बाकी दो चीटिंयां बोली– रहने दो यार! बेचारा ये अकेला है और हम तीन।

---

सोनू : अरे पिंकी तू जो 'न्यूजपेपर' पढ़ रही है वह उलटा है।

पिंकी : तो क्या हुआ? मैं पढ़ थोड़े ही रही हूँ मैं तो केवल फोटो देख रही हूँ।

---

पापा : बेटा तुम तराजू और बाट अपने बैग में डालकर स्कूल क्यों ले जा रहे हो?

बेटा : पापा, मास्टर जी कहते हैं कि पहले हर बात तोलो फिर बोलो।

---

–रवि जब तुम मेरे बराबर हो जाओगे तो क्या करोगे?– एक मोटे आदमी ने रवि से पूछा।

–जी पतला होने की कोशिश करूंगा।– रवि ने जवाब दिया।

**– विकास कुमार बंसल ( बेगूसराय )**

# क्या आप जानते हैं?

संग्रहकर्ता : डॉ. रतिराम सिंह निरंकारी

★ क्या आप जानते हैं कि मच्छर अन्य रंगों के मुकाबले नीले रंग की तरफ ज्यादा आकर्षित होते हैं।

★ आदमी का शरीर हर सेकेण्ड में 15 मिलियन खून के लाल सेल बनाता और नष्ट करता है।

★ बांस का पौधा एक दिन में 36 इंच (तीन फुट) तक बढ़ सकता है।

★ 75 वर्ष तक का एक व्यक्ति औसतन 23 वर्ष सोने में गुजार चुका होता है।

★ 18 फरवरी 1979 को सहारा के रेगिस्तान में अप्रत्याशित रूप से बर्फ पड़ी थी।

★ क्या आप जानते हैं कि नवजात शिशु वयस्कों से ज्यादा सपने देखता है।

★ मानव शरीर में इतना आयरन होता है कि उससे एक छोटी कील बनाई जा सकती है।

★ एनाकोण्डा की 10 मीटर तक लम्बाई होती है। यह दुनिया का सबसे लम्बा सांप है।

★ एक वयस्क कंगारु अपनी हर कूद में 30 फीट तक की दूरी नाप लेता है।

★ टिड्डा एक ऐसा कीट है जिसका रक्त सफेद होता है।

★ हाथी के दांत उसके जीवन में 6 बार निकलते हैं।

★ खटमल 3 वर्षों तक बिना भोजन किये जीवित रह सकता है।

★ संसार में तितली ही एक ऐसा जीव है जिसकी स्वाद ग्रंथि उसके पिछले पैरों में होती है।

★ मधुमक्खी को एक पौंड शहद बनाने के लिए बीस लाख फूलों से पराग एकत्र करना होता है।

★ नोट बनाने का कागज मकई के डंठल से बनता है।

★ बैंक ऑफ हिन्दुस्तान भारत का पहला बैंक है।

★ बिना पानी पीये चूहा ऊंट से भी ज्यादा दिनों तक जीवित रह सकता है।

★ वर्षा के पानी में विटामिन बी होता है।

★ कुछए के दांत नहीं होते।

★ सोडा वाटर में बिल्कुल भी सोडा नहीं होता।

★ शहद एक ऐसा खाद्य पदार्थ है जो हजारों साल तक खराब नहीं होता।

★ उल्लू अपनी आँखें इधर-उधर घुमा नहीं सकता।

★ एक गिलहरी की उम्र 9 साल तक की होती है।

★ छिपकली का दिल एक मिनट में 1000 बार धड़कता है।

★ गोल्डफिश अपनी आँखें कभी भी बंद नहीं करती।

★ जिराफ की जीभ 21 इंच की होती है। जिराफ अपनी जीभ से अपने कान भी साफ कर सकते हैं।

★ इन्सान की सबसे मजबूत हड्डी उसका जबड़ा होता है।

★ फिंगर प्रिंट की तरह मनुष्य की जीभ के निशान भी अलग-अलग होते हैं।

बाल कविता : आशिमा नारंग

# सबका एक सहारा

इस पावन धरती पर सबका एक सहारा।
प्रभु ने रची है दुनिया सारी यही है पालनहारा।

प्रभु साथ है तो दुनिया ये सुन्दर दिखती।
इसके बिना तो यह धरती वीरानी लगती।

हाथ पकड़कर हर मुश्किल से यही पार करेगा।
इससे करो प्रार्थना मिलजुल झोली यही भरेगा।

ईश्वर पर विश्वास रखो न समझो इसको दूर।
पूर्ण करे हर कार्य ईश्वर कृपा करे भरपूर।

यही है सच्चा साथी कर लो इस पर विश्वास।
आत्मा होगी शुद्ध तुम्हारी इसकी रखो आस।

सच्चा ईश्वर दयालु सद्गुरु यही है मददगार।
सच्चे मन से शीश झुकाकर इसे करो नमस्कार।

# गुरु

बाल कविता : सुकीर्ति भटनागर

मैं तो ऐसा बालक हूँ,
मेरे गुरु अनेक।
स्कूल में हैं अध्यापक,
घर में माता नेक।।

पिता भी हर दिन मुझको,
बातें नई बताते।
दे नई दिशा जीवन को,
ऊँच-नीच समझाते।।

पास बिठा दादा-दादी,
नीति कथा सुनाते।
नाना-नानी भी मुझको,
ज्ञान नया दे जाते।।

यही चाहते बड़े सभी,
सद्गुण ही अपनाऊं।
बनूं नागरिक मैं अच्छा,
काम देश के आऊं।।

वे मेरे अनगढ़ मन में,
पावन दीप जलाते।
मैं उनका सम्मान करूं,
वही गुरु कहलाते।

# अक्टूबर अंक रंग भरो के श्रेष्ठ चित्र

1 **सिमरन रायकुनी** 14 वर्ष
गुरु देव भवन, गंगोला मौहल्ला,
अल्मोड़ा (उत्तराखंड)

2 **मुक्ति सोनी** 12 वर्ष
आलमपुरा, नमक गोदाम के पास,
स्टेशन रोड, महोबा (उ.प्र.)

3 **सेफाली गौतम** 14 वर्ष
गाँव : सुरैला, पोस्ट : परसरामपुर,
जिला : बस्ती (उ.प्र.)

4 **गुरमन कौर** 10 वर्ष
7/254-बी, निरंकारी कालोनी,
दिल्ली

5 **सुदीक्षा डोगरा** 12 वर्ष
डी. ए. वी. स्कूल, सन्नी साईड,
सोलन (हि.प्र.)

**इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों को पसंद किया गया वे हैं–**

सुरीली (सेंट्रल टॉउन, लुधियाना), वैष्णवी (पौड़ी गढ़वाल), रिद्धि (जमुना अपार्टमेंट, विरार), अक्षद (कृष्णा नगर, अमरावती), अद्वित्य (सुन्दर नगर, अजमेर), वैभव किशोर (डांगोली बांगर), करन (मुरलिया बाग, बुढ़ार), पायल (संदपुर, होशियारपुर), प्रतिभा (कृष्णा कॉलोनी, गुरुग्राम), अजय (नेठवा, चुरू), स्वास्तिका (पवन नगर, नासिक), अनन्या (अवतार इंक्लेव, दिल्ली), आन्या (पीतमपुरा, दिल्ली), श्रेय (फेस-11, मोहाली), रश्मिता (झलवा, इलाहाबाद) कुश, आस्था, प्रभ, निशिका, जय, ओम, भूमि कटरिया, निकुंज, हार्दिक, कुश, भूमि, लक्ष, विराज सुमित, नितेश, कार्तिक, प्रतीक (गोधरा), दुर्गेश, कुनाल, रिया, ज्ञानवीर, विधिता, समर्पण, समर्पिता, प्रगति, आयुष, भारती, मयंक, अनीशा, मिष्टी (रायपुर)।

**दिसम्बर अंक रंग भरो**

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर-सुन्दर रंग भरकर 20 दिसम्बर तक कार्यालय 'हँसती दुनिया', निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009 को भेज दें।

पांच श्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) फरवरी–2020 अंक में प्रकाशित किये जाएंगे।

चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।

15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

# रंग भरो

नाम ..... आयु .....

पुत्र/पुत्री .....

पूरा पता .....

.....

.....पिन कोड .....

मैं हँसती दुनिय का नियमित पाठक हूँ। ज्ञान से भरपूर और मनोरंजन से ओत-प्रोत बच्चों में सफलता का मार्गदर्शन दिखाती पत्रिका का अगस्त अंक मिला। हर बार की तरह 'सबसे पहले' प्रशंसनीय लगा। जिन्दगी को खुशी से जीने का एक नया पाठ पढ़ाया।

कहानियों में 'छोटी सी बात', 'गलती का एहसास' व 'चोर की ईमानदारी' ने मन को छू लिया।

तिरंगे की शान बढ़ाती कविताएं भी लाजवाब लगीं। जिसमें 'आजादी का बिगुल' और 'आज तिरंगे को फहरायें' देश के प्रति निरंतर आगे बढ़ने का नया पैगाम सिखा गयी।

'दादा जी' चित्रकथा में हमेशा परिवार में मिल-जुलकर रहने की शिक्षा दिलाई। 'पढ़ो और हँसो' ने हमेशा की तरह खूब हँसाया।

बाबा अवतार सिंह महाराज के वचन व राजमाता जी के मधुर वचन के साथ-साथ माता सविन्दर हरदेव जी के अनमोल वचन भी परमात्मा के प्रति हर घड़ी साथ-साथ रहने का संदेश पहुँचाया।

'क्या होता है स्पेस सूट' लेख ज्ञानवर्धक था। इसके अलावा सभी स्थायी स्तंभ पत्रिका को चार चाँद लगाने जैसे प्रतीत हुये।

**– श्याम बिल्दानी 'सादगी' ( बडनेरा अमरावती )**

हँसती दुनिया पत्रिका एक अच्छी पत्रिका है। हमें यह बहुत पसन्द है। हम इस पत्रिका को मन लगाकर पढ़ते हैं। हम सबको यह पत्रिका अच्छी लगती है। पहले की अपेक्षा इस पत्रिका में अब काफी कुछ रोचकता आ गई है। जिसके लिए आप धन्यवाद के पात्र हैं।

**– अरुण भाटी 'सागर' ( झाबुआ )**

मैं हँसती दुनिया का पुराना पाठक हूँ। इस पत्रिका की जितनी भी तारीफ की जाए कम है। मैं हर महीने बेसब्री से इन्तजार करता हूँ क्योंकि हँसती दुनिया हँसाती ही नहीं बल्कि तरह-तरह के ज्ञान और मनोरंजन भी करवाती है। इसमें मुझे छोटी-छोटी कहानियां और 'पढ़ो और हँसो' बहुत पसन्द हैं।

**– मो. आरिफ ( जालौर )**

मैं हँसती दुनिया को नियमित रूप से पढ़ती हूँ। मुझे हर पल इसका इन्तजार रहता है। हँसती दुनिया जब आती है तो मेरा पूरा परिवार इसे बड़े ही उत्साहपूर्वक पढ़ता है। मैं तो हमेशा ईश्वर से यही प्रार्थना करूंगी कि यह पत्रिका दिन-दुगूनी रात चौगुनी तरक्की करे तथा बुलन्दियों की ऊँचाई तक पहुँचे। मैं इसको पूरे मोहल्ले के लोगों को पढ़ाती हूँ तथा मेरी सहेलियां भी इसे बड़े लगन के साथ इसे पढ़ती हैं। उन्हें भी हँसती दुनिया बेहद पसन्द है।

**– प्रतीक्षा कुशवाह ( इटावा )**

मैं हँसती दुनिया का पुराना पाठक हूँ। मैं इस पत्रिका का बेसब्री से इंतजार में रहता हूँ। मेरी यह कामना है कि हँसती दुनिया बच्चों को हँसाती रहे और प्रगति पथ को प्रशस्त करती रहे।

**– मुकेश शर्मा ( छप्परा )**

Video & Audio Webcasts on www.nirankari.org - Every month

SANT NIRANKARI MISSION

Registered with the
Registrar of Newspaper
For India Under RNI No. 25672/73 :

Delhi Postal Regd. No. G-3/DL(N)/136/2018-20
Licence No. U (DN)-23/2018-20
Licenced to post without Pre-payment

# निरंकारी पत्र-पत्रिकाएं पढ़ें और पढ़ाएं!

| हँसती दुनिया | सन्त निरंकारी | एक नज़र |
|---|---|---|
| (चार भाषाओं में) | (ग्यारह भाषाओं में) | (तीन भाषाओं में) |

'सन्त निरंकारी', 'हँसती दुनिया' (हिन्दी, पंजाबी व अंग्रेजी) एवं 'एक नज़र' (हिन्दी/पंजाबी) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें
पत्रिका विभाग, निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009
Ph. 011–47660200, E-mail : patrika@nirankari.org

सन्त निरंकारी, हँसती दुनिया, एक नज़र (मराठी) व सन्त निरंकारी (नेपाली) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें
**Sant Nirankari Satsang Bhawan**
**1st Floor, 50, Morbag Road, Naigaon, Dadar (E) MUMBAI - 400 014 (Mah.)**
e-mail : chandunirankari@yahoo.com & marathi@nirankari.org

अन्य भाषाओं की पत्रिकाओं की सदस्यता के लिए निम्नानुसार सम्पर्क करें

**TAMIL**
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
#7, Govindan Street,
Ayavoo Naidu Colony, Aminji Karai,
CHENNAI-600 029 (T.N.)
Ph. 044-23740830

**ORIYA**
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
Kazidiha, Post : Madhupatna,
CUTTACK-753 010 (Orissa)
Ph. 0671-2341250

**TELUGU**
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
No. 6-2-970, Khairtabad,
HYDERABAD- Pin : 500 029 (TS)
Ph. 040-23317679

**GUJRATI**
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
1st Floor, 50, Morbag Road,
Naigaon, Dadar (E)
MUMBAI - 400 014 (Mah.)
Ph 22-24102047

**KANNADA**
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
88, Rattanvillas Road,
Southend Circle, Basavangudi,
BENGALURU-560 023 (Karnataka)
Ph 080-26577212

**BANGLA**
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
884,G.T. Road, Laxmipur-2
East Bardhman—713101
Ph. 0342-2657219

पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार अभियान में योगदान देकर सद्गुरु माता जी के आशीर्वाद के पात्र बनें

Posted at NDPSO, Prescribed dates 21th & 22nd., Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)